इस्लाम
जिससे मुझे प्यार है

लेखक
ए० अडियार
(संपादक : दैनिक निरोत्तम, मद्रास)
तमिल से उर्दू अनुवाद
एम० ए० जमील अहमद
उर्दू से हिन्दी अनुवाद
नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

ISLAM JISSE MUJHE PYAR HAI (Hindi)
इस्लामी साहित्य ट्रस्ट प्रकाशन न० –22

किताब का नाम : इस्लाम जिससे मुझे इश्क है। (उर्दू)

लेखक : अब्दुल्लाह अडियार

पृष्ठ : 80
संस्करण : जुलाई 2015 ई०
संख्या : **1100**
मूल्य : **₹55.00**

ISBN 81-8088-145-8

मुद्रक : एच०एस० आफसेट प्रिंटर्स, नई दिल्ली-2

विषय-सूची

☆☆☆

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

"अल्लाह के नाम से जो बड़ा ही मेहरबान और रहम करनेवाला है।"

कुछ लेखक के बारे में

इस अमर कृति 'इस्लाम : जिस से मुझे प्यार है' के लेखक जनाब अब्दुल्लाह अडियार का जन्म 1935 में तमिलनाडू के ज़िला कोइम्बटूर के एक नगर तिरयूर में हुआ। इंटर तक उन्होंने शिक्षा प्राप्त की। स्कूल और कॉलेज के जीवन में साहित्यिक कार्यक्रमों में उन्हें काफ़ी दिलचस्पी रही। आप कॉलेज के तमिल साहित्य विभाग के सचिव भी रहे।

जनाब अडियार साहब ने बहुत-से नाटक भी लिखे हैं और एक ज़माने में आपने फिल्मों के लिए वार्तालाप (Dialogues) भी लिखे हैं। आपके लेखों (वार्तालापों) को काफ़ी पसन्द किया गया। वे तमिल भाषा के एक प्रबल वक्ता भी थे।

जनाब अडियार साहब विनोबा भावे के साथ भूदान आन्दोलन में भी शरीक रहे और उसके कार्यों में हिस्सा लेते रहे। इस आन्दोलन के ऑरगन 'ग्रामदान' के भी आप सम्पादक रहे। तमिलनाडू के प्रसिद्ध दैनिक समाचार पत्र 'तनरल' और 'मुरसौली' के संवाद दाता और सह-सम्पादक भी आप रहे।

बचपन ही से बहुत-से मुस्लिम विद्यार्थी आपके साथी रहे। आपके शिक्षकों में भी कई एक मुस्लिम थे। मद्रास के पत्रकारिता सम्बन्धी जीवन और राजनीतिक कार्यों के दौरान भी बहुत-से मुस्लिम लोग आपके मित्र और साथी थे। यही कारण है कि मुसलमानों के धर्म और अक़ीदों के बारे में बहुत कुछ जानकारी आसानी से उन्हें प्राप्त हो गई। इसके बाद आप ख़ुद भी इस्लाम के अध्ययन की ओर आकृष्ट हुए और इस्लाम का गहन अध्ययन किया। इमर्जेन्सी के ज़माने में जब मीसा के अन्तर्गत आपकी गिरफ़्तारी हुई और आप डेढ़ साल तक नज़रबन्द रहे तो इस्लाम के अध्ययन का एक और अवसर आपको प्राप्त हो गया। इस अवसर से फ़ायदा उठाते हुए आपने इस्लाम का और गहरा अध्ययन किया। रिहाई के बाद 'इस्लाम : जिससे मुझे प्यार है' के नाम से आपने निरन्तर लेखों का एक सिलसिला अपने अख़बार में शुरू किया। बाद में उन्होंने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया। "सारी दुनिया निकट भविष्य में प्रत्यक्ष रूप से या परोक्ष रूप से इस्लाम को अपना लेगी।" यह अडियार साहब का अटल विश्वास था।

अडियार साहब की मूल किताब तमिल भाषा में थी जिसका उर्दू अनुवाद जनाब एम० ए० जमील अहमद ने किया। इस उर्दू अनुवाद को हिन्दी भाषा में करने का सुयोग मुझे प्राप्त हुआ, इस पर मैं ख़ुदा का शुक्र अदा करता हूँ।

इस पुस्तक की लोकप्रियता को देखते हुए इसे अंग्रेज़ी और देश की अन्य भाषाओं में भी प्रकाशित किया गया है।

इस्लामी साहित्य ट्रस्ट (दिल्ली) हिन्दी भाषा में इस्लाम और मुसलमानों से सम्बन्धित पुस्तकें तैयार करने के काम में लगा हुआ है। इस पुस्तक को प्रकाशित करके हमें अत्यन्त हर्ष हो रहा है।

हमारी ख़ुदा से यही दुआ है कि इस पुस्तक से लोग ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठा सकें और यह पुस्तक ईश्वर का मार्ग पाने में मील का पत्थर साबित हो सके।

— नसीम ग़ाज़ी फ़लाही
सेक्रेट्री इस्लामी साहित्य ट्रस्ट

बेहतरीन नमूना

इस्लाम धर्म को मैं बहुत ही आदर और सम्मान की दृष्टि से देखता हूँ, इस सिलसिले में मैं अपने विचारों को लिखित रूप में पेश कर रहा हूँ। पाठकगण इनका ध्यानपूर्वक अध्ययन करेंगे, ऐसी मेरी आशा है।

आज आमतौर से धर्म के संस्थापकों को रूढ़िवादी कहा जाता है। लेकिन इन संस्थापकों की जीवनियों का अध्ययन करने के बाद मैं इसी नतीजे पर पहुँचा हूँ कि ये सब महान पुरुष अपने-अपने युग के ग़लत रीति-रिवाजों के विरुद्ध आवाज़ उठानेवाले क्रान्तिकारी लीडर थे।

हिन्दू धर्म या वैदिक धर्म के सुधार की कोशिश करनेवाले शंकराचार्य भी एक क्रान्तिकारी व्यक्ति थे। 'वेद' के एक माने आँखों से ओझल रखना या छिपाना के भी है। वेद के इस अर्थ को माननेवाली दुनिया में 'वेद सभी के लिए हैं' का नारा लगानेवाले रामानुज भी क्रान्तिकारी थे।

हज़रत मसीह *(सल्ल.)* भी अपने युग के ग़लत रीति-रिवाजों के विरुद्ध आवाज़ उठानेवाले क्रान्तिकारी व्यक्ति थे। इस प्रकार अगर हम धर्मों के इतिहास का अध्ययन करें तो हम देखेंगे कि उनके महान पुरुष रूढ़िवादी नहीं, बल्कि क्रान्तिकारी ही रहे हैं।

मैं यह बात स्पष्ट रूप से कहने में कोई झिझक महसूस नहीं करता कि इन क्रान्तिकारी लोगों में सबसे महान मुहम्मद *(सल्ल.)* हैं। हज़रत मुहम्मद *(सल्ल.)* के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों ने ज्ञान और विवेक को किसी न किसी के साथ रहकर प्राप्त किया है। फिर उनकी शिक्षा-दीक्षा में उनके माँ-बाप या उनके परिवार का भी योगदान रहा है। लेकिन हम देखते हैं कि प्यारे नबी मुहम्मद *(सल्ल.)* के हालात इससे बिल्कुल भिन्न हैं। आप *(सल्ल.)* के जन्म से पूर्व ही आप *(सल्ल.)* के आदरणीय पिता अब्दुल्लाह का देहान्त हो गया था। पिता का चेहरा जिन लोगों ने न देखा हो, वे प्यारे नबी *(सल्ल.)* की महरूमियों और कठिनाइयों का अनुमान भलीभाँति कर सकते हैं।

ये महरूमियाँ अभी ख़त्म नहीं हुई थीं कि केवल 6 वर्ष की अवस्था में ही आपकी प्यारी माँ का साया भी सिर से उठ गया। हुआ यह कि आप *(सल्ल.)* अपनी प्यारी माँ आमना और अपनी फूफी उम्मे-ऐमन के साथ यसरिब की तरफ़, जहाँ आप *(सल्ल.)* के पिता की क़ब्र थी, जा रहे थे कि रास्ते ही में माँ चल बसीं। पिता का चेहरा देखने को न मिला, अल्पावस्था और सफ़र की हालत में माँ की जुदाई का ग़म भी उठाना पड़ा। इस यतीम बच्चे को सहारा देने के लिए दादा अब्दुल-मुत्तलिब आगे आए। लेकिन अभी दो साल भी गुज़रने न पाए थे कि वे भी चल बसे।

बाप, माँ और दादा के स्नेह से महरूम! और ये सारी महरूमियाँ आठ ही वर्ष के अन्दर!! अब प्यारे नबी *(सल्ल.)* बिल्कुल अकेले खड़े थे!!!

मानव-जगत् को अल्लाह की रहमत से मालामाल करनेवाले प्यारे नबी *(सल्ल.)* बेसहारा अकेले खड़े नज़र आते हैं। इस परिस्थिति में आपके चचा अबू-तालिब ने आप *(सल्ल.)* का साथ दिया।

इस तरह विपदाओं में ग्रस्त एक यतीम के हाथ से इस्लाम जैसी बड़ी दौलत दुनिया को मिली। किस तरह इस यतीम का पैग़ाम स्पेन से चीन तक – दुनिया के इस किनारे से उस किनारे तक फैला, यह एक आश्चर्यजनक और अद्भुत सत्य है। प्यारे नबी *(सल्ल.)* का निर्दोष और हर प्रकार की बुराइयों से पाक जीवन ही इस्लाम के इस बड़े पैमाने पर प्रसार का मूल कारण है। यह बात कहना बिल्कुल उचित है कि मुहम्मद *(सल्ल.)* का महान व्यक्तित्व मानवता के लिए बेहतरीन आदर्श है।

मज़दूरी पर चौपायों को चरानेवाला बादशाह

प्यारे नबी मुहम्मद *(सल्ल.)* का जीवन बचपन से लेकर अन्त तक एक बेहतरीन आदर्श है।

कितने ही लीडर और कितने ही धार्मिक नेता ऐसे हैं जिनका प्रारम्भिक जीवन ग़लत रास्तों में भटका हुआ नज़र आता है। लेकिन प्यारे नबी *(सल्ल.)* का जीवन होश सँभालने से लेकर आख़िर तक बिल्कुल पाक-साफ़ है। उसमें न कोई धब्बा नज़र आता है, न कोई ऐब।

आप *(सल्ल.)* के संरक्षक आपके चचा अबू-तालिब थे। अबू-तालिब की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, इसलिए उनके साथ आर्थिक बोझ को कम करने के लिए प्यारे नबी *(सल्ल.)* ने मज़दूरी पर पशुओं को चराने का काम भी किया।

मेरे हुज़ूर!

सारे संसार को सीधा मार्ग दिखाने के लिए अल्लाह की ओर से भेजे हुए रहनुमा!

अरबवासियों को ज्ञान, विवेक और सूझबूझ की दौलत से मालामाल करनेवाले!

रोम (रूम) की विशाल शक्ति को पराजित करनेवाले स्वामी!

ज्ञान, कर्म और दुनिया के सारे ही खज़ानों से इस्लाम के अनुयायियों को सम्पन्न कर देने वाले महान नेता!

राजाओं के राजा!

छोटी उम्र में मज़दूरी पर आप *(सल्ल.)* ने पशु भी चराए। कितनी मुसीबतों और मुश्किलों के आप शिकार हुए इसकी कल्पना ही से हमारी आँखें सजल हो जाती हैं।

इन बेहतरीन ख़ूबियों से परिपूर्ण व्यक्तित्त्व का नेतृत्व मुसलमानों को

1. अर्थात जो लिखने-पढ़ने से अनभिज्ञ थे और जिनके यहाँ पिछली आसमानी किताबों का कोई ज्ञान न पाया जाता था।

प्राप्त है। निस्सन्देह मुसलमान रश्क के लायक़ और सौभाग्यशाली हैं।

आप *(सल्ल.)* ने बकरियाँ भी चराईं। अपने चचा के साथ बारह साल की छोटी उम्र में कारोबार के उद्देश्य से वतन से दूर सफ़र भी किया।

इस तिजारती सफ़र में अपने परिवारवालों के माल के साथ-साथ बूढ़ी और असहाय महिलाओं के माल भी ले गए ताकि उनकी भी कुछ आमदनी हो सके। इस प्रकार आप *(सल्ल.)* असहायों और कमज़ोरों का हर समय ख़याल रखते थे।

"मैं बाज़ार जा रहा हूँ, क्या आपको किसी चीज़ की ज़रूरत है
जो मैं ले आऊँ?"

यह निवेदन अपने आस-पड़ोस के असहायों से स्वयं आगे बढ़कर आप *(सल्ल.)* करते थे। जो चीज़ें वे मँगाते उनको लाकर दे देते थे।

इसी तरह बेसहारा और मज़लूम लोगों की मदद के लिए 'हिल-फुल-फ़ुज़ूल' नामक समिति बनी तो आप *(सल्ल.)* ने भी उसमें हिस्सा लिया और उसमें भरपूर सहयोग किया।

आप *(सल्ल.)* की ज़िन्दगी सच्चाई का नमूना है। आप *(सल्ल.)* ने कभी वादा ख़िलाफ़ी नहीं की।

एक बार की बात है कि एक साहब यह कहकर चले गए कि "आप यहीं ठहरें, मैं अभी आता हूँ।" प्यारे नबी *(सल्ल.)* उसी जगह ठहरे रहे। एक दिन नहीं, दो दिन नहीं, तीन दिन तक प्यारे नबी (सल्ल.) वहीं ठहरे रहे।

जो साहब आपसे यह कहकर गए थे उनके दिमाग़ से यह बात निकल गई कि वे प्यारे नबी *(सल्ल.)* को वहाँ रोक कर आए हैं। तीसरे दिन संयोग से उधर से उनका गुज़र हुआ तो प्यारे नबी *(सल्ल.)* को वहाँ मौजूद पाया। शर्मिन्दगी से उन्होंने पूछा, "क्या आप यहीं ठहरे हुए हैं?" अल्लाह के रसूल *(सल्ल.)* ने किसी नाराज़ी के बग़ैर बड़ी ही नरमी के साथ कहा, "आप ही ने तो मुझे यहाँ ठहरे रहने को कहा था।"

ऐसी ही महान ख़ूबियों के कारण आप *(सल्ल.)* को 'अमीन' (अमानतदार) और 'सादिक़' (सच्चा) के नामों से लोग पुकारा करते थे।

ऐसे उच्च गुणों से सुसज्जित मनुष्य को हज़रत ख़दीजा *(रज़ि.)* ने अपने जीवन साथी के तौर पर चुना। यह वास्तव में हज़रत ख़दीजा

(रज़ि.) का सौभाग्य था।

इससे पहले हज़रत ख़दीजा *(रज़ि.)* दो बार विधवा हो चुकी थीं। वे प्यारे नबी *(सल्ल.)* से उम्र में पन्द्रह साल बड़ी थीं। 'ताहिरा' (पाकदामन) उनका लक़ब था।

हज़रत ख़दीजा *(रज़ि.)* से क़ासिम, अब्दुल्लाह (ताहिर), ज़ैनब, रुक़य्या, उम्मे कुलसूम, फ़ातिमा— आप *(सल्ल.)* के कई बच्चे पैदा हुए। क़ासिम और अब्दुल्लाह अल्पायु ही में चल बसे। हज़रत ख़दीजा से विवाह के बाद प्यारे नबी *(सल्ल.)* को कुछ आर्थिक निश्चिन्तता प्राप्त हुई तो प्यारे नबी *(सल्ल.)* एकाग्रचित्त और यकसू होकर मानवता के सुधार के बारे में सोचने लगे।

पारिवारिक कर्तव्य का निर्वाह करते हुए दीन की तरफ़ बुलाना और दीन को ग़ालिब करने की ज़िम्मेदारियाँ पूरी करना हमें इस महान नबी ही की ज़िन्दगी में नज़र आता है।

गौतम बुद्ध संन्यास ग्रहण किए हुए थे,

शंकराचार्य ने शादी नहीं की थी,

हज़रत मसीह अविवाहित थे,

बहुत-से धर्मों के गुरु ब्रह्मचारी अविवाहित और संन्यासी ही नज़र आते हैं।

लेकिन प्यारे नबी *(सल्ल.)* अपनी घरेलू ज़िम्मेदारियों को भी पूरा करते हुए नज़र आते हैं और दीन की स्थापना के सारे बोझों को भी अपने कन्धों पर उठाए हुए हैं। सिर्फ़ एक ही धर्म पत्नी नहीं, कई पत्नियों की ज़िम्मेदारियों का बोझ भी आप पर है। इतनी सारी ज़िम्मेदारियों के बावजूद आप *(सल्ल.)* का घरेलू जीवन भी एक आदर्श जीवन है और आप *(सल्ल.)* का सामाजिक जीवन भी।

लोगों ने आप *(सल्ल.)* को 'अल-अमीन' (अमानतदार) और 'अस्सादिक़' (सच्चा) कहा, लेकिन जब आप *(सल्ल.)* ने दीन की ओर बुलाया तो यही लोग आपके प्रबल विरोधी बन गए।

धर्मों के इतिहास में कितने ही क्रान्तिकारियों ने लोगों को आमन्त्रित किया, लेकिन किसी का इतना घोर विरोध नहीं किया गया, जितना आप *(सल्ल.)* का। आप *(सल्ल.)* के सन्देश में आख़िर ऐसी क्या बात थी कि जिसका इतना घोर विरोध किया गया?

निराकार की उपासना

दुनिया के किसी क्रान्तिकारी ने वह बात नहीं कही जो बात नबी *(सल्ल.)* ने कही है। इबादत के लिए प्रतिमा, मूर्ति, चित्र, कोई भी चीज़ नहीं होनी चाहिए। यह शिक्षा प्यारे नबी *(सल्ल.)* ने चौदह सौ वर्ष पूर्व दी। इबादत के लिए प्रतिमाएँ और तस्वीरें नहीं होनी चाहिएँ— यह बात आप *(सल्ल.)* से पहले भी बहुत-से महापुरुषों ने कही। किन्तु जितने ज़ोरदार ढंग से मुहम्मद *(सल्ल.)* ने कही, कोई न कह सका। आप *(सल्ल.)* ने कहा ही नहीं बल्कि मूर्ति-पूजा का जड़ से उन्मूलन कर दिया। इस प्रकार आप *(सल्ल.)* ने केवल उपदेश ही नहीं दिया बल्कि उसपर अमल करके भी दिखाया।

यहाँ तमिलनाडू में हम ई॰ वी॰ आर॰ को एक महान क्रान्तिकारी व्यक्ति मानते हैं। इसलिए कि उन्होंने मूर्ति-पूजा की निन्दा ही नहीं की बल्कि व्यवहारतः मूर्तियों को तोड़ा भी। लेकिन प्यारे नबी *(सल्ल.)* ने शताब्दियों पहले यह कारनामा अंजाम दिया। क़ुरआन पाक की आयत, "सच आ गया, असत्य मिट गया। असत्य मिटने ही के लिए होता है" को पढ़ते हुए काबा में रखे हुए बुतों को प्यारे नबी ने हटा दिया।

मुसलमानों की सबसे बड़ी ईद 'ईदुल-अज़हा' है। यह एक महान पैग़म्बर इबराहीम *(अलैहि.)* की याद में मनाई जाती है। उन्होंने एक महान कारनामा अन्जाम दिया था। वह यह कि हज़रत इबराहीम *(अलैहि.)* अपने आज्ञाकारी सुपुत्र इसमाईल *(अलैहि.)* को अल्लाह की राह में क़ुरबान करने के लिए आगे बढ़े। इसी याद में यह ईद मनाई जाती है।

हाँ! इन बुज़ुर्गों की तस्वीरें भी काबा में रखी हुई थीं।

ईद मनाने का तो हज़रत मुहम्मद *(सल्ल.)* ने आदेश दिया और इस तरह इन बुज़ुर्गों की प्रतिष्ठा को सदैव के लिए जीवित कर दिया, लेकिन बुतों के साथ-साथ उनकी तस्वीरों को भी आप *(सल्ल.)* ने काबे से हटा दिया। क्या इससे बढ़कर किसी क्रान्तिकारी कार्य की कल्पना की जा सकती है?

फिर यह अहम कार्यवाही किस देश में की गई? उस देश में की गई जहाँ अज्ञानता और मूर्तिपूजा लोगों की नस-नाड़ियों में दौड़ रही थी।

रूस में कम्युनिज़्म (साम्यवाद) का शासन रहा है, कम्युनिज़्म में

ईश्वर का इनकार किया जाता है, लेकिन वहाँ देवी-देवताओं के बुतों को मिटाने या हटाने का किसी ने साहस नहीं किया। आज भी रूस में जगह-जगह बुतख़ाने और मूर्तिस्थल बने हुए हैं।

यहाँ तमिलनाडू में कुछ क्रान्तिकारी कवियों ने यह गीत गाया कि वह सुबह कब आएगी जबकि यहाँ के बुतों को तोड़ दिया जाएगा लेकिन यहाँ की गली-गली और मोहल्ले-मोहल्ले में हम आज भी बुतों को मौजूद पाते हैं।

मगर चौदह सौ साल पहले बुतों को काबा से हटाया गया। यह मानव-इतिहास में बहुत ही साहसपूर्ण और क्रान्तिकारी क़दम था।

अपने ही देश में अपने ही बाप-दादा के पूजे हुए बुतों को हटाना और मिटाना असाधारण साहस का काम है, और ऐसा क्रान्तिकारी कारनामा मानव-इतिहास में नबी *(सल्ल.)* ही के हाथों अंजाम पाया है। आज मनुष्य प्रगतिवादिता के बड़े-बड़े दावे करता है। ईश्वर के इनकार और नास्तिकता को अपनी प्रगतिवादिता के सुबूत में पेश करता है। लेकिन वह बुतों और तस्वीरों की मुहब्बत में आज भी गिरफ़्तार है।

यह कैसी विडम्बना है कि ये प्रगतिवादी लोग ईश्वर का तो इनकार करते हैं और आगे बढ़ें तो देवी-देवताओं के बुतों को भी व्यर्थ कह देते हैं लेकिन स्वयं नेताओं की प्रतिमाएँ बनाते और उनके आगे सिर झुकाते हैं।

वे देवताओं की तस्वीरों को हटाते हैं लेकिन उनके स्थान पर अपने नेताओं या धर्मगुरुओं की तस्वीरें लगा लेते हैं। प्रतिमाएँ हों या चित्र, दोनों ही मनुष्य की कमज़ोरी का प्रतीक हैं। इस कमज़ोरी से सावधान करनेवाले और इससे मनुष्य को बचानेवाले प्यारे नबी *(सल्ल.)* हैं, और उन्होंने यह महान कार्य चौदह सौ साल पहले करके दिखा दिया।

आज प्रतिमाओं, मूर्तियों और तस्वीरों का सहारा लिए बग़ैर केवल ज्ञान और धारणाओं के आधार पर जीवन का कोई आन्दालेन अगर चल रहा है तो वह इस्लामी आन्दोलन है।

कुछ लोग कहते हैं कि अगर प्रतिमा और तस्वीरें बनाना बन्द कर दिया जाए तो सुन्दरता के प्रति मानव की अभिरुचि समाप्त हो जाएगी। लेकिन इन चीज़ों से मुक्त और पाक मुसलमानों ने दुनिया को सुन्दर से सुन्दर इमारतों का तोहफ़ा दिया है।

कल्पना को तस्वीर और प्रतिमा की क़ैद से मुक्ति दिलाने के बाद मुसलमानों ने जो कारनामे अंजाम दिए उसका विवरण यह है–

(1) गणितशास्त्र में मौजूदा अंकों की संरचना की गई।

(2) बीजगणित वुजूद में आया और उसका विकास भी हुआ।

(3) निर्माण कला में सुन्दर से सुन्दर इमारतों और मस्जिदों का निर्माण हुआ।

(4) रसायनशास्त्र में सिल्वर-नाइट्रेट और सल्फ़्यूरिक एसिड की खोज हुई।

(5) चिकित्सा शास्त्र में–

अ : अल-फ़ाराबी की किताब शल्य चिकित्सा,

ब : इब्ने-सीना की 'अल-क़ानून'

स : अली-इब्ने-अब्बासी की 'किताबुल मालिकी' जैसी मौलिक पुस्तकें लिखी गईं।

(6) काव्य में–

मुतनब्बी से लेकर इक़बाल तक सुन्दर और अछूते काव्य का एक समुन्दर लहरें ले रहा है।

(7) साहित्य में–

अलिफ़ लैला, लैला-मजनू जैसे ख़ज़ाने मानव-जाति को मिले।

कोई पूछ सकता है कि क्या दूसरी क़ौमों ने गर्व करने योग्य ऐसे कार्य किए हैं? उत्तर में यही कहना पड़ता है कि 'इतने अधिक नहीं।'

फिर एक और विशेष गुण यह है कि इन शिक्षाओं को लेकर उठनेवाली क़ौम ऐसे मरुस्थल से निकली जहाँ तपती हुई धूप थी और प्रकृति के सुन्दर दृश्यों का अभाव था। इसके बावजूद यह क़ौम सौन्दर्य का इतना स्वाद और सुरुचि दुनिया को दे गई।

हाँ! एक उम्मी (निरक्षर) की शिक्षा ने यह सब किया और मानव-संसार को बुलन्दियों तक पहुँचा दिया।

मैं इस्लाम से क्यों प्यार करता हूँ– इसके कुछ कारण आगे उल्लिखित हैं।

इस्लाम : जिससे मुझे प्यार है

चमत्कारों के बिना

चमत्कारों के बिना सबसे बड़ा चमत्कार दिखानेवाले नबी!

धार्मिक गुरुओं पर आम लोग आसानी से विश्वास नहीं करते। बहुत सारे गुरु आश्चर्यजनक और अस्वाभाविक चीज़ों का प्रदर्शन करते हैं और उनके चमत्कारों को देखकर आम इनसानों की चमत्कार प्रिय अभिरुचि उनपर विश्वास करने लगती है।

ईश्वर पर ईमान भी बहुत-से धर्मों से इसी चमत्कार प्रियता पर निर्भर करता है— हक़ीक़त यह है कि जब तक इनसान इस बात को न माने कि नेक मनुष्य को शाश्वत जीवन और बुरे मनुष्यों को शाश्वत असफलता मिलकर रहेगी तब तक सम्भव नहीं कि मनुष्य नेकी और पाकीज़गी की ज़िन्दगी अपनाने के लिए दृढ़ता और मज़बूती के साथ आगे बढ़ सके।

इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए और इन बातों को मन मस्तिष्क में बिठाने के लिए हमें पुराणों में, वेदों में, प्राचीन और नवीन नियमों की पुस्तकों में धर्म की ओर बुलानेवाले भाँति-भाँति से अलौकिक तरीक़े अपनाते हुए दिखाई देते हैं।

ऐसे चमत्कारों से हटकर पवित्र और गहरा जीवन अगर किसी का नज़र आता है तो वह प्यारे नबी *(सल्ल.)* का जीवन है।

इतना ही नहीं, बल्कि जब चमत्कारों का मुतालबा (माँग) आप *(सल्ल.)* से किया गया तो इसके जवाब में आप *(सल्ल.)* ने क़ुरआन मजीद को पेश कर दिया।

मूर्तिमान चमत्कारों से मुक्त होकर ज्ञान और विवेक की ओर बुलाने वाला क्रान्तिकारी व्यक्तित्व प्यारे नबी *(सल्ल.)* का ही है।

एक और पहलू से प्यारे नबी *(सल्ल.)* के जीवन को देखिए। आप *(सल्ल.)* धार्मिक गुरु हैं और साथ ही जिहाद का नेतृत्व भी आप *(सल्ल.)* ने किया है।

उपदेश देनेवाले उपदेशक भी हैं और एक कुशल शासक और रहनुमा भी। इन दोनों हैसियतों का आप *(सल्ल.)* के व्यक्तित्व में बड़ा सुन्दर समन्वय पाया जाता है।

बद्र का युद्ध हो या बनी-क़ैनुका का घेराव हो, सवीक़ की लड़ाई हो या उहुद का युद्ध, तबूक की मुहिम हो या ख़ैबर का संघर्ष, हर जगह और हर रण-क्षेत्र में नबी *(सल्ल.)* एक समझदार और बहादुर जनरल के रूप में सामने आते हैं।

धार्मिक गुरु और साथ ही फ़ौज के अध्यक्ष! ये दोनों ख़ूबियाँ एक साथ अगर पाई जाती हैं तो नबी *(सल्ल.)* ही की ज़िन्दगी में!

जिहाद और सैन्य कला में नबी *(सल्ल.)* माहिर नज़र आते हैं। आप *(सल्ल.)* ने ईमान और अक़ीदों के बल पर जो साहस अपने साथियों में पैदा किया वह इतिहास का एक शानदार कारनामा है।

नबी *(सल्ल.)* ने लड़ाई न तो देशों को विजय करने की लालसा में की और न दुश्मनों को नीचा दिखाने की भावना से। केवल हक़ की सरबुलन्दी आप *(सल्ल.)* के सामने थी और इसलिए इसको जिहाद कहा गया, और इस जिहाद में अपने प्राणों की बाज़ी लगानेवाले बहादुरों का नाम शहीद रखा गया। शहीद के माने होते हैं— अपनी जान क़ुरबान करके हक़ की गवाही देनेवाले।

लड़ाई के मैदान में घबराकर और तीरों की बौछार से डरकर भाग निकलनेवाला जहन्नमी है।

यह थी प्यारे नबी *(सल्ल.)* की महान शिक्षा जिहाद के बारे में! इसका परिणाम यह हुआ कि प्यारे नबी *(सल्ल.)* के साथी निर्भय होकर पूरे साहस के साथ सत्य के सन्देश को लेकर स्पेन से चीन तक फैल गए।

प्यारे नबी *(सल्ल.)* के बताए हुए तरीक़े से जब मुसलमान दूर हुए तो उसी समय से उनका पतन शुरू हो गया। इससे पहले उन्होंने कभी

1. मिस्टर अन्नादुराई डी. एम. के. के संस्थापक थे। वे डी. एम. के. सरकार के पहले मुख्यमंत्री निर्वाचित हुए थे। वे एक राजनीतिज्ञ ही नहीं एक मनीष भी थे। डी. एम. के. तथा ए. आई. डी. एन. के. के . क्षेत्रों में उनका नाम बड़े आदर से लिया जाता है।

पराजय का मुँह नहीं देखा था।

प्यारे नबी *(सल्ल.)* के ज़माने में रूम की हुकूमत एक विशाल शक्ति समझी जाती थी लेकिन आप *(सल्ल.)* की बहादुरी और दृढ़ विश्वास के सामने रूम की यह शक्ति ठहर न सकी। जी हाँ, यही वे मुहम्मद *(सल्ल.)* हैं जो मरुस्थल में पैदा होकर पलने-बढ़नेवाले एक निर्धन व्यक्ति थे और फिर मानवता के लिए महान नेता साबित हुए।

सैनिक सामग्री में आप *(सल्ल.)* को चमड़े की लगाम तक उपलब्ध न थी। मजबूरन कपड़ों से बनी हुई लगामें सैनिक घोड़ों को लगाई जा रही थीं।

एक तरफ़ सैनिक सामग्री का यह अभाव! दूसरी तरफ़ विशाल रोमन एम्पायर, हर प्रकार की सैनिक साज-सज्जा से मालामाल! क्या मुक़ाबला था दोनों का?

लेकिन अपने सिद्धान्तों पर विश्वास रखनेवाले नबी *(सल्ल.)* और उनके अनुयायियों ने अल्लाह पर भरोसा करके मुक़ाबला किया और सफल हुए। एक तरफ़ आप *(सल्ल.)* दुनिया को त्याग देनेवाले संन्यासियों से भी ज़्यादा निःस्वार्थ और सरल स्वभाव थे, दूसरी तरफ़ अरब और उसके आसपास के कामयाब शासक। इसके बावजूद आप *(सल्ल.)* की ज़िन्दगी बड़ी सादा थी। आप मामूली मकान में रहते थे। आप *(सल्ल.)* का जीवन स्तर वह न था जो रईसों और अमीरों की ज़िन्दगी का हुआ करता है। आप *(सल्ल.)* का भोजन अत्यन्त साधारण होता था। यहाँ तक कि आप *(सल्ल.)* को फ़ाक़े तक की नौबत आ जाती थी, जिसे याद करके हमारी आँखें सजल हो जाती हैं।

ये सारी ख़ूबियाँ वास्तव में देन हैं इस्लाम की, जिसके प्यारे नबी *(सल्ल.)* सच्चे प्रतिनिधि और ध्वजावाहक थे।

इसी लिए इस्लाम से मुझे प्यार है।

क्या हज़रत मसीह (*अलैहि॰*) ईश्वर के पुत्र हैं?

हम पहले बयान कर चुके हैं कि प्यारे नबी *(सल्ल॰)* ने मूर्तियों को तोड़ने और चित्रों को हटाने का एक महान क्रान्तिकारी कार्य किया। इसके अतिरिक्त मानव इतिहास का एक और महान क्रान्तिकारी कार्य आप *(सल्ल॰)* के हाथों सम्पन्न हुआ, जिसे समझने की आवश्यकता है।

बाप, बेटा; पवित्र आत्मा का त्रीश्वरवाद ईसाइयों के बुनियादी अक़ीदों में से है।

पापियों को मुक्ति दिलाने और मानव-पापों की सज़ा स्वयं भुगतने के लिए सूली पर चढ़कर हज़रत मसीह *(अलैहि॰)* ने जान दी। फिर तीसरे दिन जीवित होकर बाप के बाईं ओर सिंहासन पर विरजमान हुए। यह है ईसाइयों की धारणा।

1. हज़रत मसीह *(अलैहि)* ईश्वर के पुत्र हैं।

2. वे मरने के बाद ज़िन्दा हो उठे।

उपरोक्त इन दो बातों को न माननेवाले लोग ईसाई नहीं हो सकते। ये दोनों अक़ीदे ईसाई जगत् पर छाये हुए थे कि प्यारे नबी *(सल्ल॰)* रसूल बनाकर भेजे गए। आप *(सल्ल॰)* ने घोषित किया कि ये दोनों अक़ीदे असत्य हैं। आप *(सल्ल॰)* ने बताया–

- हज़रत मसीह *(अलैहि॰)* ईश्वर के पुत्र नहीं, ईश्वर के नबी थे।
- उन्हें सूली नहीं दी गई।

असल बात यह है कि उन्हें गिरफ़्तार करने के लिए जब एक गरोह उनके कमरे में घुसा तो उन्हीं में का एक व्यक्ति उनकी शक्ल का नज़र आने लगा। इसी हमशक्ल इनसान को सूली पर चढ़ाया गया। क़ुरआन में फ़रमाया गया है :

1. यह तमिलनाडू का एक गाँव हैं जहाँ ऊँची ज़ात और नीची ज़ातवालों के बीच भयानक दंगे हुए थे।

"वास्तव में उन्होंने उसको क़त्ल किया न सूली पर चढ़ाया, बल्कि मामला उनके लिए सन्दिग्ध हो गया।" (क़ुरआन; 4:157)

बाइबिल में जिन नबियों का वर्णन मिलता है उन सभी नबियों का वर्णन क़ुरआन में भी हुआ है। जैसे— हज़रत आदम *(अलैहि.)*, इबराहीम *(अलैहि.)*, इसहाक़ *(अलैहि.)*, इसमाईल *(अलैहि.)*, याक़ूब *(अलैहि.)*, यूसुफ़ *(अलैहि.)*, मूसा *(अलैहि.)*, हारून *(अलैहि.)*, दाऊद *(अलैहि.)*, सुलैमान *(अलैहि.)*, यूनुस *(अलैहि.)*, इलयास *(अलैहि.)*, ज़करीया *(अलैहि.)*,।' इन्हीं नबियों के साथ क़ुरआन मे हज़रत ईसा *(अलैहि.)* का नाम भी लिया गया है और साफ़ तौर पर स्पष्ट कर दिया गया है कि हज़रत ईसा *(अलैहि.)* एक नबी थे, उनमें ईश्वरत्व का कोई चिह्न तक न था। ईसाइयों और मुसलमानों में क्या मतभेद है, यह मामला यहाँ विचाराधीन नहीं है। मैं जिस दृष्टि से मामले को देख रहा हूँ वह यह है कि जिस धर्म का उस समय बोलबाला था, जो उस समय एक महान शक्ति के रूप में दुनिया में मौजूद था, उसकी ग़लत धारणा के विरुद्ध प्यारे नबी *(सल्ल.)* ने किसी लाग-लपेट के बिना आवाज़ उठाई, लेकिन इस प्रयास में हज़रत मसीह *(अलैहि.)* के सम्मान या आदर में कोई कमी न आने दी।

हज़रत ईसा *(अलैहि.)* के हाथ पवित्र-आत्मा के द्वारा मज़बूत किए गए थे। उनके द्वारा आपको इन्जील प्रदान की गई। इन दोनों वास्तविकताओं को 'अल-किताब' (क़ुरआन मजीद) ने बहुत ही स्पष्ट शब्दों में पूरे गर्व और आदर के साथ बयान किया है। बिल्कुल इसी तरह अन्य धर्मों की ग़लत बातों का तो क़ुरआन खंडन करता है लेकिन उनके महापुरुषों का आदर करने की शिक्षा देता है।

- ग़लत बातों का खण्डन
- व्यक्तियों का आदर।

इन दोनों बातों को इस्लाम ने गडमड नहीं किया है, बल्कि स्पष्टतः इन दोनों मामलों में सतर्क रहने और इनसाफ़ से काम लेने की शिक्षा दी है।

इमरजेंसी के ज़माने में मीसा के अन्तर्गत मुझे भी जेल में डाल दिया गया था। उस समय मुझे दुनिया के विभिन्न धर्मों के ग्रन्थों का अध्ययन करने का अवसर मिला।

मेरे रिश्तेदारों ने दोस्तों और मित्रों ने और कुछ मुस्लिम साथियों ने इन पवित्र ग्रन्थों को मुझ तक पहुँचाया।

इन सभी ग्रन्थों के अध्ययन करने पर जिस किताब से मैं बहुत ज़्यादा प्रभावित हुआ और जो मुझे अपनी दृष्टि में सबसे ज़्यादा जंची, वह पवित्र क़ुरआन है।

दिव्य क़ुरआन के विशेष गुण

धार्मिक पुस्तकें विभिन्न प्रकार की पाई जाती हैं। उनमें हर एक की अपनी विशेषताएँ हैं।

हिन्दू धर्म की सबसे पवित्र किताबें वेद हैं। वेद वास्तव में मुनियों और ऋषियों के ईश्वर की शान में गाए हुए गीतों का संकलन हैं।

ईसाइयों की इन्जीलें और यहूदियों की तौरात के विभिन्न खण्ड वास्तव में इनसानों के हाथों लिखा हुआ नबियों का इतिहास और जीवनी है।

इसी तरह जितनी धार्मिक पुस्तकें मिलती हैं, वे या तो कुछ बुज़ुर्ग विभूतियों के रचित गीत हैं जो ईश्वर की शान में गाए गए हैं या फिर वे किताबें नबियों या महापुरुषों के जीवन-वृत्तान्त पर आधारित हैं और उन्हें कुछ लेखकों ने लिखा है।

इसके विपरीत क़ुरआन की प्रमुख विशेषता यह है कि वह प्यारे नबी *(सल्ल॰)* की अपनी लिखी हुई किताब नहीं है और न यह इनसानों के गाए भक्ति-गीतों का कोई संकलन है। इसकी हैसियत केवल इतिहास की हो, ऐसा भी नहीं है, बल्कि—

● अल्लाह ने लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) में जो आदर-योग्य पुस्तक सुरक्षित रखी है वही दिव्य क़ुरआन है।

● सुरक्षित पट्टिका की उस किताब से परम आदरणीय फ़रिश्ते हज़रत जिबरील *(अलैहि॰)* ने इसको समय-समय पर प्यारे नबी *(सल्ल॰)* तक अल्लाह की ओर से पहुँचाया है।

यही मुसलमानों की धारणा है। क़ुरआन लिखी हुई किताब नहीं है बल्कि अवतरित किताब है। मुसलमानों का इसपर दृढ़ विश्वास है।

इस किताब के बहुत-से प्रमुख गुण हैं। इसके शब्दों की लयबद्धता से मैं आनन्दित हुआ हूँ। क्या आवाज़ को किसी प्रकार की पावनता प्राप्त है? मैं कहूँगा कि हाँ है। आवाज़ ही दुनिया की बुनियाद है।

वेद कहता है कि 'ओम' की आवाज़ से दुनिया की रचना हुई।

बाइबिल का कहना है कि सबसे पहले ईश्वर का बोल था फिर यह दुनिया हुई।

क़ुरआन की आवाज़ जहाँ एक बेहतरीन गद्य की आवाज़ है, वहीं वह अपने अन्दर एक बेहतरीन काव्य का स्वर लिए हुए है। एक अति सुन्दर दृश्य का सौन्दर्य भी उसमें पाया जाता है। गद्य, पद्य और छन्द से अनुगुंजित ब्रह्माण्ड का सौन्दर्य, इन्हीं चीज़ों का संकलन है क़ुरआन की आवाज़।

"क्या यह वाणी इतनी सुन्दर है कि इस जैसी दूसरी वाणी सम्भव नहीं?"

यह प्रश्न आज भी किया जा सकता है और उस समय भी उठाया गया था जबकि क़ुरआन अवतरित हो रहा था। क़ुरआन ने इस सवाल का जवाब उसी समय दे दिया था "अगर हो सके तो इस जैसी वाणी ले आओ।"

इस चुनौती का जवाब देने से दुनिया आज भी मजबूर है। इसका जवाब देने की कोशिश जिसने भी की, उसे मुँह की खानी पड़ी। क़ुरआन कहता है :

> "ऐ नबी! हमने तुम्हें कौसर प्रदान कर दिया, तो तुम अपने रब ही के लिए नमाज़ पढ़ो और क़ुर्बानी करो। तुम्हारा दुश्मन ही जड़ कटा है।" (क़ुरआन, 108 : 1-3)

इस तरह सौन्दर्य और ज्ञान से परिपूर्ण इस किताब की आयतें हैं। इनका मुक़ाबला करने की कुशल अरबी कवियों ने उसी समय कोशिश की थी और अपनी खुली हार को इन शब्दों में स्वीकार किया था :

"मा हाज़ा क़ौलुल बशर।" "यह इनसान की वाणी नहीं हो सकती।"

क़ुरआन ने चुनौती दी :

> 'कह दो कि अगर इनसान और जिन्न सब के सब मिलकर क़ुरआन जैसी कोई चीज़ लाने की कोशिश करें तो न ला सकेंगे। चाहे वे सब एक-दूसरे के साथ सहयोग ही क्यों न करें।" (क़ुरआन, 17:88)

क़ुरआन मजीद ही में उसके निम्नलिखित नाम हमको मिलते हैं। ये सब नाम महत्वपूर्ण हैं और बड़ी हक़ीक़तों का पता देते हैं :

1. अल-किताब — किताब
2. हब्लुल्लाह — अल्लाह की रस्सी
3. अल-बयान — स्पष्ट
4. अल-बुरहान — स्पष्ट प्रमाण
5. अल-मुहैमिन — हिफ़ाज़त करनेवाली
6. अल-मुबारक — बरकतवाली
7. अल-मुसद्दिक़ — पुष्टि करनेवाली
8. अज़-ज़िकरा ज़िक्र — नसीहत, याद दिहानी
9. अन-नूर — रौशनी
10. अल-बसाइर — आंतरिक रौशनियाँ
11. अल-हुदा — सीधा मार्ग
12. अर्रहम — रहमत
13. अश्शिफ़ा — उपचार
14. अल-मोऊ़ज़ — नसीहत करनेवाली
15. अल-हकम — फ़ैसला करनेवाली
16. अल-मुबीन — साफ़-साफ़ बयान करनेवाली
17. अल-अरबी — अरबी ज़बान में
18. अल-हिकमत — सर्वथा तत्त्वदर्शिता एवं ज्ञान
19. अल-हक़्क़ — सत्य
20. अल-क़य्यिम — मज़बूत
21. अल-फ़ुरक़ान — (सत्य-असत्य में) फ़र्क़ करनेवाली
22. अत-तन्ज़ील — उतरनेवाली, (उतारी हुई)
23. अल-हकीम — हिकमत वाली
24. अज़्ज़िक्र — याद दिलाना
25. अल-बशीर — ख़ुशख़बरी देनेवाली
26. अन-नज़ीर — डरानेवाली
27. अल-अज़ीज़ — ताक़तवाली
28. अर-रूह — रूह, स्प्रिट
29. अल-मजीद — इज़्ज़त व बुज़ुर्गीवाली
30. अल-करीम — बुज़ुर्ग
31. अल-मुकर्रम — आदर करनेवाली

32. अल-अजीब — अद्‌भुत
33. अल-मरफ़ूआ — उच्च
34. अल-मुतह्हिर — पवित्र, पाक-साफ़
35. अन-निमत — नेमत

क़ुरआन के माने हैं— पढ़ी जानेवाली। जी हाँ! यही किताब पढ़ी जानेवाली किताब है। दुनिया में सबसे ज़्यादा पढ़ी जानेवाली किताब।

उम्मी नबी[1]

अल्लाह की उतारी हुई किताब क़ुरआन को सबसे पहले पढ़नेवाला महापुरुष 'उम्मी' था अर्थात वह पढ़ा-लिखा न था।

'उम्मी' के माने ना-समझ और बे-अक़्ल के नहीं हैं। बल्कि उन लोगों को 'उम्मी' कहा जाता है जो लिखना-पढ़ना तो न जानते हों लेकिन फिर भी उनकी स्मरण शक्ति तेज़ हो सकती है। उनके पास पहले से ईश्वरीय आदेशों का कोई ज्ञान नहीं होता।

तमिल साहित्य में ये बातें मशहूर हैं कि शेअर (छन्द) को एक बार सुनकर दोहराने वालों की, दो बार सुनकर दोहराने वालों की, तीन बार सुनकर दोहराने वालों की, चार बार सुनकर दोहराने वालों की, इन सब की क्रमानुसार प्रशंसा की जाती है। लेकिन अरब में सैकड़ों शेअरों (छन्दों) को केवल स्मरण से फ़र-फ़र सुनानेवाले 'उम्मी' थे।

काव्य में ही नहीं बल्कि गणित विज्ञान में भी कुछ लोग इतने अधिक स्मरण शक्तिवाले मिलते हैं कि अक़्ल हैरान हो जाती है। 214 को 314 से गुणा कीजिए तो पढ़े-लिखे लोग काफ़ी समय के बाद इसका हल निकालते हैं, मगर कुछ ऐसी तेज़ स्मरण शक्तिवाले भी होते हैं जो पढ़े-लिखे न होने के बावजूद इसका हल अपने दिमाग़ से तुरन्त निकाल लेते हैं। इसी तरह वंशावली वग़ैरह के सिलसिले में भी कई नस्लों तक की वंशावली फ़र-फ़र सुनानेवाले उस समय अरबों में मौजूद थे जो पढ़े-लिखे नहीं थे।

'उम्मी' के माने नासमझ के नहीं हैं। अगर उम्मी के माने नासमझ के लिए जाएंगे तो फिर प्यारे नबी *(सल्ल.)* के व्यापार और आप *(सल्ल.)* की सूझ-बूझ की बहुत सारी घटनाओं का कोई कारण नहीं बताया जा सकता। आप *(सल्ल.)* पढ़े-लिखे न थे परन्तु आपकी स्मरण-शक्ति बहुत तेज़ थी और आप उच्च मनोवृत्ति के मालिक थे।

यही वह ख़ास गुण था कि जब वह्य प्यारे नबी (सल्ल॰) पर उतरी तो आपने साफ़-साफ़ वह्य के शब्दों को ज्यों-का-त्यों लोगों के सामने

दोहरा दिया और उनका इमला कराया।

प्यारे नबी *(सल्ल.)* को अल्लाह की मदद हासिल थी और आप *(सल्ल.)* के सहाबा *(रज़ि.)* पर भी अल्लाह की ख़ास मेहरबानी थी। आप *(सल्ल.)* की मुबारक ज़बान से वह्य के शब्दों को सहाबा *(रज़ि.)* ने सुना और फिर उनको ज़बानी याद कर लिया। पूरे क़ुरआन मजीद के हाफ़िज़ों को आज भी जब हम क़ुरआन का पाठ करते हुए देखते हैं तो उनकी योग्यता पर भी रश्क आता है और क़ुरआन मजीद के अद्भुत चमत्कार पर भी आश्चर्य होता है। हाँ! एक 'उम्मी' ही ने यह महान कार्य किया और बड़ी योग्यताओं को उभारा ।

अरबों को आमतौर से कम-समझ, जाहिल, गुमराह, ख़ून-ख़राबे के रसिया, बुद्धिहीन और बद-सलीक़ा कहा जाता है। ये सारी बातें बिलकुल निराधार हैं। हज़ारों साल पहले दुनिया के अन्य स्थानों में बसनेवाले इनसानों में जो ख़ूबियाँ और जो कमज़ोरियाँ थीं, वही ख़ूबियाँ वही कमज़ोरियाँ अरबों में भी पाई जाती थीं। लेकिन अरबों की एक विशेषता यह थी कि वे ज़्यादा पढ़े-लिखे न थे किन्तु उनकी स्मरण शक्ति आश्चर्यजनक थी। अन्य देशों के लोग स्मरण-शक्ति में उनसे बहुत पीछे थे। केवल अशिक्षित होना अज्ञान और बर्बरता का कारण नहीं होता।

अरबों से भी बढ़कर बर्बरता का प्रदर्शन कितने ही देशों में हुआ है।

- क़िलों में इनसानों के सिर काटकर लटकाए गए।
- ज़िन्दा इनसानों को रखकर दीवार को चुन दिया गया।
- हाथियों के पाँव तले उन्हें रौंदा गया।
- सूलियों पर चढ़ाकर कीलों से जड़ा।
- ज़िन्दा दफ़न किया गया।
- चूने में धँसाया गया।
- भूखे शेरों के सामने शिकार की तरह फेंका गया।

रोम से लेकर तमिलनाडू तक बर्बरता के ये प्रदर्शन हुए जैसा कि इतिहास के पृष्ठ इसके गवाह हैं। क्या अरबों की बर्बरता और अज्ञान

इससे बढ़कर था? अतः यह एक निराधार आरोप है जो अरबों पर लगाया जाता है। कहा जाता है कि प्यारे नबी *(सल्ल.)* की दावत (आहवान) का अरबों ने विरोध किया। आप *(सल्ल.)* को सताया लेकिन मदीनावासी भी अरब ही थे, जिन्होंने प्यारे नबी का साथ दिया और इसका हक़ अदा किया। आप *(सल्ल.)* पर जानें निछावर कीं। आप *(सल्ल.)* के नेतृत्व में विभिन्न रण क्षेत्रों में अपनी जानों को ख़तरे में डालकर जंगें कीं।

काबा में रखी हुई मूर्तियों को हटाना और उनकी पूजा को असत्य बतलाने का क्रान्तिकारी काम भी प्यारे नबी *(सल्ल.)* के नेतृत्व में अरबों ही के हाथों हुआ।

यह महान क्रान्ति चौदह सौ साल पहले अगर हिन्दुस्तान में, चीन में या किसी और देश में लाई जाती तो क्या वहाँ की जनता इस सिलसिले में इसी वफ़ादारी का सबूत देती जिस वफ़ादारी का सबूत अरबों ने दिया है?

इस पहलू से जब हम अरबों को देखते हैं तो उनकी महानता हम पर स्पष्ट हो जाती है। अरब की धरती रेगिस्तान है और इसी रेगिस्तान में यह महान क्रान्ति आई। इस हैसियत से मैं उस देश को और वहाँ की जनता को बड़े आदर और श्रद्धा की दृष्टि से देखता हूँ। मेरे हज़ारों सलाम हों उनपर।

इस क्रान्ति को लानेवाली इस महान ग्रन्थ की कुछ और विशेषताएँ आगे आएँगी।

जीवन्त भाषा में जीवन्त ग्रन्थ

वेद, बाइबिल और अन्य धर्मों के ग्रन्थ और क़ुरआन मजीद के बीच एक बड़ा अन्तर पाया जाता है।

हिन्दू-धर्म की बुनियादी किताबें चार वेद हैं और इन वेदों की भाषा संस्कृत है।

संस्कृत का अर्थ ही होता है, नई भाषा और निखारी हुई भाषा।

अगर यह माना जाए कि वेद आरम्भ काल ही से इनसानों को मिले हैं, जैसा कि कुछ लोगों की धारणा है, तो इसका मतलब यह होता है कि वे असल संस्कृत में नहीं, बल्कि संस्कृत से पहले की भाषा में रहे होंगे।

बाद में आनेवाली भाषाओं में जब वेद लिखे गए तो स्पष्ट है कि असल वेद में और नई भाषा में लिखे गए वेदों में अन्तर एक स्वाभाविक बात है।

मगर क़ुरआन मजीद अरबी भाषा में अवतरित हुआ और बिलकुल उसी अरबी भाषा में आज भी हमारे सामने है। उसमें बाल बराबर भी कोई फ़र्क़ नहीं पाया जाता।

यहूदियों की तौरात को देखिए। उसके अवतरण के शताब्दियों बाद इसराईलियों ने उसे संकलित किया।

वास्तविकता यह है कि तौरात हज़रत मूसा *(अलैहि॰)* पर इबरानी भाषा में अवतरित हुई थी। सैकड़ों साल के बाद उसको लिखा गया। फिर यह लिखा हुआ संग्रह नष्ट हो गया। लातीनी और यूनानी भाषा के तौरात ही शेष रहे। फिर इन भाषाओं में तौरात के अनुवाद से इसराईलियों ने फिर इबरानी भाषा में उसे रूपान्तरित किया। इस तरह अनुवाद से असल भाषा में परिवर्तित की जानेवाली किताब का क्या हाल हुआ होगा, इसे हर व्यक्ति समझ सकता है।

डेड सी (मृत-सागर) के निकट कुमरान गुफा में इबरानी भाषा में लिखे हुए जो काग़ज़ात (Scrolls) मिले हैं वे भी केवल बाइबिल के कुछ

इधर-उधर के हिस्से ही हैं। यह बाइबिल की नवीनतम खोज है।

अगर कोई ग्रन्थ अनुवादों पर निर्भर न करते हुए अपनी मूल भाषा में, जिसमें वह अवतरित हुआ है, मौजूद है तो वह क़ुरआन मजीद है। यह विशेषता उसी को प्राप्त है।

हज़रत ईसा *(अलैहि.)* पर अवतरित किताब सुरयानी की एक बोली 'आरामी' भाषा में थी। लेकिन उसको पहले-पहल यूनानी भाषा में लिखा गया। फिर यूनानी से लातीनी भाषा में अनुवाद किया गया। फिर विभिन्न भाषाओं में। बाइबिल अपनी असल भाषा में मौजूद नहीं है, बल्कि अनुवाद की भाषा ही में हमारे पास है। जबकि क़ुरआन मजीद जिस भाषा में अवतरित हुआ था उसी भाषा में आज भी हमारे सामने है।

क़ुरआन मजीद के एक विशेष गुण पर विचार कीजिए।

- हिन्दू धर्म के वेद अपनी असल भाषा के बजाए संस्कृत में लिखे गए, लेकिन संस्कृत भी आज बोलचाल की भाषा नहीं है।
- यहूदियों की धार्मिक पुस्तक की भाषा इबरानी शताब्दियों तक बोलचाल की भाषा न थी। (इसराईल ने इस भाषा को दोबारा अपनी जनता पर थोपा है।)
- इसी तरह हज़रत ईसा *(सल्ल.)* की भाषा 'आरामी' और गौतम बुद्ध की भाषा, 'पाली' दोनों ही आज बोलचाल की भाषा नहीं हैं।

जिन-जिन भाषाओं में आसमानी पुस्तकों का अवतरण हुआ है वे सारी भाषाएँ आज मुर्दा हो चुकी हैं। इसके विपरीत क़ुरआन और सिर्फ़ क़ुरआन ही बोलचाल की ज़िन्दा भाषा में ज़िन्दा किताब के रूप में हमारे सामने मौजूद है।

क़ुरआन मजीद के एक और गुण पर विचार कीजिए :

- चार वेद
- यहूदियों का ग्रन्थ तौरात
- हज़रत मसीह *(अलैहि.)* की इंजील
- गौतम बुद्ध का ग्रन्थ 'तम्मा बुदम'

ये सारे ही ग्रन्थ जिन महान व्यक्तियों को मिले थे उनके देहावसान के काफ़ी समय बाद इन ग्रन्थों का संकलन हुआ। परन्तु क़ुरआन और सिर्फ़ क़ुरआन ही वह ग्रन्थ है जिसको तत्काल ही क्रमबद्ध किया जाता और लिखा जाता रहा। प्यारे नबी *(सल्ल॰)* इस काम की स्वयं देख-रेख करते रहे और इस सिलसिले में विशेष ध्यान देते रहे। आप *(सल्ल॰)* के देहावसान के बाद ही पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू-बक्र *(रज़ि॰)* ने पूरे क़ुरआन को नबी *(सल्ल॰)* के बताए हुए क्रम के अनुसार एक जिल्द में एकत्र कर दिया। यह काम उन्होंने क़ुरआन की सुरक्षा के उद्देश्य ही से किया। जब क़ुरआन उतर रहा था तो नबी *(सल्ल॰)* के साथी उसको झिल्लियों और पत्तों पर लिखते और नबी *(सल्ल॰)* को सुनाते गए। क़ुरआन के सही तौर पर लिखे जाने का पूरा ख़याल रखा गया।

जैसे-जैसे यह किताब अवतरित होती गई वैसे-वैसे ख़ास सावधानी के साथ उसको ठीक-ठीक लिखने का प्रबन्ध होता रहा। इतने व्यवस्थित रूप में और सतर्कता के साथ लिखी जानेवाली किताब सिर्फ़ क़ुरआन मजीद ही है।

वह किताब जो किसी से छिपाकर नहीं रखी गई

क़ुरआन पाक की आयतें सारी की सारी अल्लाह की ओर से अवतरित हुई हैं।

वेद में ख़ुदा की शान में गाए हुए इनसानों के गीत शामिल हैं।

तौरात में बनी-इसराईल का इतिहास और नबियों के उपदेश भी दाख़िल कर दिए गए हैं।

इन्जील में इतिहास भी है और नबियों और सुधारकों के उपदेश और प्रवचन भी।

लेकिन क़ुरआन मजीद वह किताब है जिसमें सारी की सारी आयतें अल्लाह की तरफ़ से हैं। इनसानों की नसीहत के लिए उसमें ऐतिहासिक घटनाएँ अन्तर और बाह्य जगत् में पाए जानेवाले संकेतों का उल्लेख और ज्ञान और विवेक से परिपूर्ण उपदेश भी पाए जाते हैं मगर वे सब ख़ुदा ही की तरफ़ से अवतरित हुए हैं, नबी या किसी और की तरफ़ से उसमें कुछ भी शामिल नहीं किया गया है।

नबी *(सल्ल०)* के अपने शब्दों, कर्मों, उपदेशों और प्रवचनों को अलग से संकलित किया गया है। उनमें से किसी चीज़ को भी क़ुरआन में शामिल नहीं किया गया। इस तरह किसी प्रकार की मिलावट के बिना ख़ुदा के शब्दों का संकलन ही क़ुरआन मजीद है।

अन्य धर्मों की किताबें कुछ विशेष वर्गों के पढ़ने के लिए ही होती हैं। जैसे ब्राह्मण, आचार्य और भिक्षु आदि।

वेद के एक अर्थ छिपाने योग्य चीज़ के भी होते हैं। अर्थात् जिसे आम लोगों की नज़रों से छुपाकर रखना चाहिए।

ख़ुदा के शब्द ख़ुदा के सब बन्दों के लिए हैं। बिना किसी भेदभाव के सभी ख़ास और आम के लिए हैं। सभी के पढ़ने के लिए और सभी के याद करने के लिए हैं। यह हिदायत सिर्फ़ क़ुरआन देता है।

क़ुरआन के हाफ़िज़ सैकड़ों और हज़ारों की संख्या में हर देश और हर ज़माने में पाए गए हैं। यह विशेषता भी सिर्फ़ इसी किताब (क़ुरआन) को प्राप्त है।

इतिहास से मालूम होता है कि बहुत-से लोगों को वेद पढ़ने या सुनने पर सज़ा का भागीदार ठहराया गया है और सज़ाएँ भी दी गई हैं।

इसके विपरीत क़ुरआन की ख़ूबी यह है कि वह कहता है कि यह वाणी ख़ुदा की तरफ़ से है। इसका सुनना-पढ़ना हर एक के लिए ज़रूरी और सौभाग्य की बात है।

इतिहास साक्षी है कि तिरुकोतियो के मन्दिर के निकट वेद पढ़ने के जुर्म में रामानुज को यातनाएँ दी गईं।

क़ुरआन की शिक्षा तो यह है कि दूसरों के लिए इसका अवसर उपलब्ध कराया जाए कि वे अल्लाह की वाणी सुनें, शायद कि उन्हें हिदायत मिल जाए।

वेद की व्याख्या बयान करनेवाले आदि शंकराचार्य का, उनकी माँ के देहान्त के मौक़े पर समाज ने बाईकॉट किया। दूसरी तरफ़ क़ुरआन को बुलन्द आवाज़ से पढ़नेवाले हज़रत अली *(रज़ि.)* को 'बाबुल-इल्म' (ज्ञान का द्वार) कहा गया। अल्लाह की किताब उसके बन्दों के लिए है और इनसानों को उसे पढ़ना चाहिए, इस बात की शिक्षा ताकीद के साथ सिर्फ़ इस्लाम ही देता है।

इस शिक्षा और ताकीद का असर यह हुआ कि क़ुरआन नष्ट होने से बच गया।

आज मराकश से लेकर इराक़ तक लगभग बीस करोड़ लोगों की बोलचाल की भाषा क़ुरआनी भाषा अरबी है।

क़ुरआन ने दुनिया के लोगों को भी जीवन-सन्देश दिया और साथ ही अरबी भाषा को भी जीवन्त एवं अमर बना दिया।

कुछ आसमानी पुस्तकें मानव-जीवन से सम्बन्धित अनावश्यक बातें पेश करती हैं जिनके कारण विभिन्न प्रकार की उलझनें और पेचीदगियाँ पैदा हो जाती हैं। कुछ अन्य प्रकार की धार्मिक पुस्तकें ऐसी हैं कि वे

इनसान और उसकी समस्याओं से कोई बहस ही नहीं करतीं, बल्कि दर्शन-शास्त्रों का केवल एक गोरख धन्धा मालूम होती हैं। पहली प्रकार की पुस्तकें लोगों को अकारण अनावश्यक ज़ंजीरों में जकड़ती हैं और दूसरी तरह की किताबें इनसान को बेलगाम बना देती हैं। इसके विपरीत क़ुरआन मजीद की अपनी एक निराली शान है। यह किताब इनसानों को एक ओर तो मौलिक आस्थाओं एवं धारणाओं की शिक्षा देती है, दूसरी ओर यह उन्हें क़ानून, नियम और अनुशासन सिखाती है, और इनकी पाबन्दियों को अनिवार्य ठहराती है। आस्थाओं, धारणाओं और नियमों को निश्चित करने के बाद वह मानव-चिन्तन और कार्य-शक्ति को इस बात की आज़ादी देती है कि वह क़ुरआन की प्रकृति और उसके मिज़ाज के अनुकूल रहकर अपना काम करे। इस तरह बुनियादी उसूलों की पाबन्दी के साथ गौण मामलों में कार्य एवं चिन्तन की आज़ादी प्रदान करनेवाली एक मात्र पुस्तक क़ुरआन मजीद है।

"प्यारे नबी *(सल्ल.)* से बढ़कर मामलों में मशविरा करनेवाला हमने किसी को नहीं पाया।" अल्लाह के रसूल *(सल्ल.)* के साथियों ने आप *(सल्ल.)* की सेवा में यह श्रद्धांजलि पेश की है। यह विशेष गुण प्यारे नबी *(सल्ल.)* को क़ुरआन ही की बरकत से हासिल हुआ।

हम देखते हैं कि आम धार्मिक पुस्तकें शासकों, पूँजीवादियों और ताक़तवरों के हाथों को मज़बूत कर रही हैं और कमज़ोरों पर ज़ुल्म ढाने में सहायक सिद्ध हो रही हैं। लेकिन क़ुरआन मजीद वह 'किताब' है जो कमज़ोरों को सहारा देती है और ज़ालिमों को सख़्ती से पकड़ती है। निस्सन्देह यदि क़ुरआन मजीद को इनसानी आज़ादी का चार्टर और मैग्नाकार्टा कहा जाए तो इसमें कोई अतिशयोक्ति की बात न होगी।

---

1. पेट्रो एक लातीनी शब्द है जिसके मायने हैं पत्थर। पेट्रोल के मायने हैं फ़ज़्ल किया हुआ।

मानव जाति का मैगनाकार्टा

आम तौर से धार्मिक पुस्तकें दावा तो करती हैं कि वे इनसानों को खुदा से मिलाती हैं, लेकिन व्यवहारतः जो चीज़ हमारे सामने आती है, वह यह कि वे इनसानों को शासकों, पूँजीवादियों और पुजारियों आदि के आगे झुका देती हैं और जनता के हाथों को ज़ंजीरों से जकड़ने और उनको बिलकुल बेबस बना देने का काम भी यही किताबें करती हैं।

शासकों को ईश्वर का अवतार, प्रतिनिधि और ईश्वर की छाया आदि उपाधियाँ दी गईं। कुछ किताबों में आज़ादी की बात केवल कह दी गई है, लेकिन व्यवहारतः इनसान को इनसानी गुलामी से मुक्ति दिलाने में वे नाकाम रही हैं। दूसरी तरफ़ हम देखते हैं कि क़ुरआन मजीद पुकार-पुकार कर कहता है कि इनसान को इनसान की बन्दगी नहीं करनी चाहिए। इनसान को इनसान का अनुसरण नहीं करना चाहिए। इनसान को इनसान की पूजा नहीं करनी चाहिए। इनसान को दूसरे इनसानों के आगे हाथ नहीं फैलाना चाहिए। क़ुरआन ने इन शिक्षाओं को इतने विस्तार से बयान किया है कि उसके माननेवालों की रगों में ये विचार ख़ून बनकर दौड़ने लगे। इस तरह क़ुरआन ने उपासना और बन्दगी के योग्य केवल अल्लाह को बताया। उसने यह भी स्पष्ट कर दिया कि आज्ञापालन केवल अल्लाह का होना चाहिए और मदद भी सिर्फ़ उसी से माँगी जानी चाहिए।

इस शिक्षा को ग्रहण करने से क्या होता है और व्यवहारतः क्या हुआ? इनसान पर से इनसान की ख़ुदाई मिटा दी गई। इनसान का इनसान पर ज़ुल्म और हर प्रकार की ज़्यादती बन्द हो गई। मानव-चिन्तन और विकास पर रोक लगानेवाली रुकावटों को ख़त्म कर दिया गया।

इनसान को सच्ची और मुकम्मल आज़ादी मिली। हर एक ख़ुदी की आँख खुली।

इनसानी जीवन से अंधेरे ख़त्म हुए और प्रकाश की धारा प्रवाहित हो गई।

मानव चिन्तन की फुलवारी में मधुर पवन के झोंके आए और

इनसान खुशी और हर्ष से झूमने लगा। इनसान पर से इनसानी ख़ुदाई को पूर्णतः समाप्त करने की अद्वितीय सफलता जिस किताब के हिस्से में आई, उस किताब का नाम है क़ुरआन मजीद!

इससे बढ़कर मानव-अधिकारों का घोषणा-पत्र मानव-जाति ने कभी नहीं देखा। मैग्नाकार्टा से कहीं ज़्यादा, बहुत महान मानव-अधिकारों का घोषणा-पत्र अगर कोई है तो यह ग्रन्थ क़ुरआन मजीद ही है।

इस किताब ने ग़ुलामों के हाथों में पड़ी हुई ज़ंजीरों को तोड़ा। सारे इनसानों को एक ही पंक्ति में समान अधिकारों के साथ ला खड़ा किया। इनसानी आज़ादी की यह विधा, रौशनी का यह मीनारा सारे इनसानों को सम्बोधित करके कहता है—

> "इनसानो! हमने तुमको एक ही मर्द और औरत से पैदा किया और फिर तुम्हारे क़बीले और वंश बना दिए ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो" (क़ुरआन 49 : 13)

इस शिक्षा ने लोगों को बताया कि मानव-जाति एक कुटुम्ब है। एक-दूसरे को पहचानने के लिए ही क़बीले, वंश और परिवार बने हैं।

— जन्म के आधार पर ऊँच-नीच,

— जाति के आधार पर ऊँच-नीच, और

— परिवार के आधार पर ऊँच-नीच।

ये सभी भेद-भाव जड़ से उखाड़कर फेंक दिए गए। सारे इनसान स्वतन्त्र पैदा हुए हैं, वे सब समान अधिकारों और समान जीवन के अधिकारी हैं।

यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि इनसानों को दूसरों की हुकूमत से रिहाई दिलाकर और उन्हें समान अधिकार प्रदान करके क्या क़ुरआन ने उन्हें बेलगाम छोड़ दिया? क्या उन्हें सरकश बना दिया? क्या उन्हें ज़िम्मेदारियों से मुक्त कर दिया? नहीं, नहीं, हरगिज़ नहीं!

क़ुरआन ने अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करने की ताकीद की। सिर्फ़ एक ख़ुदा से डरो, दूसरों से न डरो, इसका आदेश दिया। इन शिक्षाओं के द्वारा ईश-भय दिल में बिठाकर केवल ईश्वरीय क़ानूनों के आगे नतमस्तक होने का बुलन्द हौसला क़ुरआन ने इनसान को दिया।

अत्याचारी शासकों, अन्याय पर आधारित क़ानूनों, शोषण करनेवालों, युद्ध, बीमारी, मौत, निर्धनता और दरिद्रता, धन और प्रतिष्ठा की क्षति; इन तमाम आशंकाओं से न डरने, न घबराने और न डगमगाने की शिक्षा एवं प्रशिक्षण देकर क़ुरआन ने इनसान को बहादुर, प्रतिष्ठित और गौरवपूर्ण बना दिया। इनसान को इन महान गुणों से मालामाल करनेवाली एक ही किताब है, और वह है क़ुरआन मजीद।

रेगिस्तान की गोद में पलनेवाले अरब अपने क़बीलों के गृह-युद्ध में उलझे हुए थे। समकालीन सभ्यता और संस्कृति की उन्हें हवा तक न लगी थी। इस महान पुस्तक ने ऐसे लोगों को सभ्यता और सुशीलता से सुसज्जित कर दिया और उन्हें दुनिया पर शासन करने की क्षमता, विवेक और उपायों से अवगत कराके उन्हें हर प्रकार से बहादुर बना दिया।

यह बड़ा कारनामा वास्तव में क़ुरआन की क्रान्तिकारी शिक्षाओं का परिणाम है। मैं इस सत्य की घोषणा बिना किसी असमंजस के हिमालय की चोटियों पर खड़े होकर करने के लिए तैयार हूँ।

इस दिव्य ग्रन्थ की एक विशेषता यह है कि इसने हर क़दम पर इस बात की ताकीद की है कि आदमी हर हालत में न्याय पर जमा रहे और कभी भी इनसाफ़ का दामन हाथ से छूटने न दे। हक़ और इनसाफ़ का दामन छोड़नेवालों को इसने आख़िरत के दर्दनाक अज़ाब से डराया है। अपने रिश्तेदार का मामला हो तब भी उनके लिए हक़ और इनसाफ़ का दामन न छोड़ो। इस बात की ताकीद क़ुरआन करता है। इसी न्याय और इनसाफ़ की शिक्षा का असर है कि इस्लामी हुकूमत के अद्वितीय हक़ और इनसाफ़ के नमूने इतिहास में सुरक्षित हैं।

इनसान की आज़ादी, इनसानी बराबरी और न्याय— इन तीन उत्कृष्ट मौलिक सिद्धान्तों पर क़ुरआन मजीद मानव-समाज का निर्माण करता है।

क़ुरआन का एक और विशेष गुण देखिए—

बहुत-सी धार्मिक पुस्तकें इनसान के सांसारिक जीवन को पाप का जीवन कहती हैं। उससे जल्द से जल्द छुटकारा पाने की, उसको त्याग देने की और उसको छोड़ देने की शिक्षा देती हैं।

इसके विपरीत क़ुरआन यह कहता है कि इनसान ख़ुदा की एक उत्कृष्ट रचना है। वह जीवन में मानव-कर्तव्यों के महत्व को उजागर करता है, इन कर्तव्यों को पूरा करने की ताकीद करता है।

वह कहता है कि इन कर्तव्यों को पूरा करने के परिणाम-स्वरूप तुम्हें एक पूर्ण जीवन मिलेगा और जीवन में सौन्दर्य एवं आकर्षण पैदा होगा। हम कह सकते हैं कि मानव-जीवन को आदर और प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखनेवाली किताब सिर्फ़ क़ुरआन मजीद है।

यह किताब ज़िन्दगी के झमेलों से भागने की शिक्षा नहीं देती बल्कि यह किताब तो कहती है कि ज़िन्दगी के इसी संघर्ष से पूर्ण जीवन इनसान को प्राप्त होता है।

● ऐसी विशेषताओं से परिपूर्ण यह किताब वास्तव में ईश्वरीय किताब है।

● ऐसी नेमतों से मालामाल करनेवाली यह किताब अवश्य ही पवित्र किताब है।

● ऐसी बुलन्दियों तक पहुँचानेवाली यह किताब निस्सन्देह महान किताब है।

रसूल इनसान ही होते हैं

इनसानों के अन्दर सच्चाई, शिष्टाचार और लज्जा आदि गुण पैदा करने और इनकी शिक्षा देने के लिए प्यारे नबी *(सल्ल.)* को भेजा गया। उन्होंने बड़ी ही सादगी से ज्ञान और विवेक से भरपूर ये महान शिक्षाएँ इनसानों को दीं।

फ़लाँ ईश्वर के अवतार हैं, फ़लाँ ईश्वर का अंश हैं, फ़लाँ ईश्वर के पुत्र हैं, साधारणतः इन दावों के साथ बहुत-से धर्मों का आविर्भाव हुआ और उनको दुनिया ने माना भी और उनकी पैरवी करने की कोशिश भी की।

लेकिन इस्लाम धर्म में हम देखते हैं कि मुहम्मद *(सल्ल.)* को न ख़ुदा कहा जाता है, न ख़ुदा का बेटा कहा जाता है और न ख़ुदा का अवतार कहा जाता है।

प्यारे नबी *(सल्ल.)* सीधे-सादे मनुष्य नज़र आते हैं, लेकिन एक पवित्राचारी मनुष्य, एक महान चरित्र के अधिकारी मनुष्य। क़ुरआन एलान करता है–

> "ऐ नबी! कह दो कि मैं तो बस एक इनसान हूँ तुम्हीं जैसा। मेरी तरफ़ वह्य की जाती है कि तुम्हारा ख़ुदा बस एक ही ख़ुदा है।" (क़ुरआन; 18:110)

क़ुरआन में अनेकों बार नबी *(सल्ल.)* की ज़बानी यह एलान कराया गया है कि वे कहें कि वे इनसान हैं, पवित्राचारी इनसान।

- मैं किसी चमत्कार का प्रदर्शन नहीं करूँगा।
- मेरे पास आसमानों के ख़ज़ाने नहीं हैं।
- मैं परोक्ष का ज्ञान नहीं रखता।
- मैं इनसान हूँ, तुम ही जैसा इनसान।

मानवीय घोषणाओं के साथ अगर किसी ने किसी दीन को क़ायम किया है तो वे प्यारे नबी *(सल्ल.)* ही हैं।

क़ुरआन स्पष्ट शब्दों में कहता है कि-

"तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते, न उन बहरों तक अपनी आवाज़ पहुँचा सकते हो जो पीठ फेरकर भागे जा रहे हों, और न अन्धों को रास्ता बताकर भटकने से बचा सकते हो। तुम तो अपनी बात उन ही लोगों को सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं और फिर फ़रमाँबरदार बन जाते हैं।" (क़ुरआन; 27:80-81)

अतः यह बात स्पष्ट हो जाती है कि प्यारे नबी *(सल्ल.)* ने किसी चमत्कार को प्रदर्शित करने की कोशिश नहीं की और न ही खुदाई में शरीक होने का दावा किया। सीधी राह दिखाने के लिए भेजे गए वे एक इनसान ही थे।

बात सिर्फ़ इतनी ही नहीं। क़ुरआन कहता है कि इस सत्य-मार्ग से अगर नबी *(सल्ल.)* भी हटें तो कोई ताक़त उन्हें खुदा की पकड़ से न बचा सकेगी–

"और अगर तुमने इस ज्ञान के बाद जो तुम्हारे पास आ चुका है, उन (अधर्मियों) की इच्छाओं का पालन किया तो अवश्य ही तुम्हारी गणना ज़ालिमों में होगी।" (क़ुरआन; 2:145)

क़ुरआन फिर कहता है:-

"अगर इस ज्ञान के बाद जो तुम्हारे पास आ चुका है, तुमने उन (अधर्मियों) की इच्छाओं का पालन किया तो अल्लाह से बचानेवाला न तो तुम्हारा कोई मित्र होगा और न सहायक।"

(क़ुरआन, 2:120)

जब हम इन आयतों को पढ़ते हैं तो दिल काँप उठता है। मानवता के लिए जिसे 'बेहतरीन आदर्श' कहा गया, क्या वह खुदा को छोड़कर अपनी इच्छाओं की पैरवी कर सकता है।

फिर भी क़ुरआन स्पष्ट शब्दों में सावधान करता है कि नबी *(सल्ल.)* से भी अगर ग़लती हो जाए तो उनको अल्लाह की पकड़ से बचानेवाला कोई दोस्त और मददगार न होगा।

क्या किसी धार्मिक पुस्तक में उसके लानेवाले को इतनी खुली और स्पष्ट चेतावनी दी गई है? मैं कहूँगा कि बिल्कुल नहीं।

"मैं एक इनसान हूँ तुम्हीं जैसा। मैं भी कोताही करूँ तो अल्लाह के यहाँ पकड़ा जाऊँगा।" इस दावे के साथ किसी धर्म को प्रस्तुत करने वाला अगर कोई है तो वे नबी *(सल्ल.)* हैं। यदि कोई धर्म ऐसा पैग़म्बर दे सका है तो वह सिर्फ़ इस्लाम धर्म है।

फिर इसके साथ एक आश्चर्यजनक बात और भी है जो हमें आम धर्मों के इतिहास में कहीं नहीं मिलती, और वह यह कि प्यारे नबी *(सल्ल.)* को उनके ज़माने में भी इनसान ही समझा गया और देहान्त के बाद भी आज तक इनसान ही समझा जा रहा है और हमेशा इनसान ही समझा जाएगा।

कितने ही धार्मिक गुरु इनसान के रूप में पैदा हुए, ज़िन्दगी में इनसान बनकर रहे। उन्होंने समाज में सुधार और भलाई के कार्य किए और फिर उनका देहान्त हो गया। लेकिन उनकी आँखें बन्द होते ही उन्हें ख़ुदा का दर्जा दे दिया गया।

मिसाल के तौर पर गौतम बुद्ध को लीजिए। वे पैदा तो इनसान ही हुए थे, हाँ यह ज़रूर है कि वे भले कार्य करते थे और भलाई का प्रचार करते थे। लेकिन जैसे ही उनका देहान्त हुआ, उन्हें ख़ुदा बना लिया गया। लेकिन इस्लाम में नबी *(सल्ल.)* को कभी ख़ुदा का दर्जा नहीं दिया गया। वे बस इनसान हैं, चरित्र से सुसज्जित इनसान और पैग़म्बर होने की हैसियत से सम्पूर्ण मानव-जाति के लिए 'बेहतरीन नमूना।'

इसी हद तक आप *(सल्ल.)* की प्रशंसा पिछले चौदह सौ सालों से की जा रही है। ख़ुदा का दर्जा आप *(सल्ल.)* को कभी नहीं दिया गया।

इस्लाम : अन्नादुराई की दृष्टि में

भूतपूर्व मुख्यमंत्री तमिलनाडू मिस्टर अन्नादुराई[1] ने 7 अक्तूबर 1957 ई॰ को हज़रत मुहम्मद *(सल्ल.)* की सीरत के विषय पर एक भाषण दिया था, जिसे यहाँ प्रस्तुत करना लाभप्रद सिद्ध होगा। अपने भाषण में मिस्टर अन्नादुराई ने कहा था कि—

> इस्लाम के सिद्धान्तों और धारणाओं की जितनी ज़रूरत छठी शताब्दी में दुनिया को थी, उससे कहीं बढ़कर उनकी ज़रूरत आज दुनिया को है, जो विभिन्न विचारधराओं की खोज में ठोकरें खा रही है और कहीं भी उसे चैन नहीं मिल सका है।

इस्लाम केवल एक धर्म नहीं है, बल्कि वह एक जीवन-सिद्धान्त और अति उत्तम जीवन-प्रणाली है। इस जीवन-प्रणाली को दुनिया के कई देश ग्रहण किए हुए हैं।

मेरे अपने धार्मिक विचारों और सीरत की इस सभा में मेरी उपस्थिति के बीच कोई प्रतिकूलता नहीं है। इस्लाम को एक जीवन प्रणाली समझकर ही मैं इस सभा में शरीक हुआ हूँ।

जीवन-सम्बन्धी इस्लामी दृष्टिकोण और इस्लामी जीवन-प्रणाली के हम इतने प्रशसंक क्यों हैं? सिर्फ़ इसलिए कि इस्लामी जीवन-सिद्धान्त इनसान के मन में उत्पन्न होनेवाले सभी सन्देहों और आशंकाओं का जवाब सन्तोषजनक ढंग से देता है।

हज़रत मुहम्मद *(सल्ल.)* की शिक्षाओं में सबसे पहली शिक्षा यह है कि खुदा के साथ किसी को शरीक न किया जाए। इस शिक्षा का मैं दिल से आदर करता हूँ और इसे आदर और प्रशंसा की दृष्टि से देखता हूँ।

इस शिक्षा का आदर इतना क्यों किया जाए?

इसलिए कि यह शिक्षा मानव-चिन्तन को सोचने पर विवश करती है, उभारती है।

खुदा के साथ किसी को शरीक न किया जाए। क्यों न किया

जाए? खुदा की सत्ता और गुण क्या हैं? इनसान के लिए इन तमाम बातों पर सोचने का पूरा सामान यह शिक्षा जुटाती है।

एक तमिल मनीषी ने कहा है—

जिसने देखा उसने पाया नहीं,

जिसने पाया उसने देखा नहीं,

जिसने देखा उसने कहा नहीं,

जिसने कहा उसने देखा नहीं।

खुदा के गुण असीमित हैं। उसमें खो जाना और निरन्तर उसमें आगे बढ़ना ही कमाल है।

खुदा के साथ किसी को शरीक करने का मतलब यह होता है कि किसी को हम खुदा के समकक्ष समझें।

खुदा का शरीक कौन हो सकता है? इसलिए नबी *(सल्ल.)* ने शिर्क से मना किया है।

अन्य धर्मों में शिर्क की शिक्षा मौजूद होने से हम जैसे लोग बहुत-सी हानियों का शिकार हुए हैं। शिर्क के रास्तों को बन्द करके इस्लम इनसान को बुलन्दी और उच्चता प्रदान करता है और पस्ती और उसके भयंकर परिणामों से मुक्ति दिलाता है।

इस्लाम इनसान को सिद्ध पुरुष और भला मानव बनाता है। खुदा ने जिन बुलन्दियों तक पहुँचने के लिए इनसान को पैदा किया है, उन बुलन्दियों को पाने और उन तक ऊपर उठने की शक्ति और क्षमता इनसान के अन्दर इस्लाम के द्वारा पैदा होती है।

खुदा के लिए संभव था कि वह स्वयं प्रकट होकर इनसान को यह आदेश देता कि 'मुझे खुदा मान ले।' इस सूरत में इनसान के लिए अपनी चिन्तन-शक्ति को बड़ा आधात पहुँचता और इनसान मानसिक एवं चिन्तन-विकास से वंचित रह जाता। लेकिन नबी को भेजकर उनके द्वारा जब खुदा ने यह सन्देश दिया कि 'ये मेरी तरफ़ से भेजे हुए रसूल हैं।' — तो यह अनिवार्य हो गया कि इनसान चिन्तन-मनन से काम ले। क्या नुबूवत का दावा करनेवाले इस व्यक्ति को वास्तव में खुदा ने भेजा

है? क्या उसके अन्दर वे उच्च गुण पाए जाते हैं, जिनसे एक नबी को सुसज्जित होना होना चाहिए? इन सारी बातों को सोचने पर इनसान विवश होता है। एक तमिल कवि कहता है, "ज्ञान और बोध ही ख़ुदा है।" ख़ुदा ही ज्ञान और बोध है। वास्तविक ज्ञान और सच्चा बोध ही इनसान को ख़ुदा से अवगत कराते हैं। ख़ुदा से बे-परवाह लोगों के पास न ज्ञान होता है, न बोध, चाहे वे अपने ज्ञान के कितने ही बड़े दावेदार क्यों न हो।

इस्लाम की एक अन्य ख़ूबी यह है कि उसको जिसने भी अपनाया वह ज़ात-पात के भेदभाव को भूल गया।

मुदगुत्तूर में एक-दूसरे की गर्दन मारनेवाले जब इस्लाम ग्रहण करने लगे तो इस्लाम ने उनको भाई-भाई बना दिया। सारे भेदभाव समाप्त हो गए। नीची जाति के लोग नीचे नहीं रहे, बल्कि सब के सब प्रतिष्ठित और आदरणीय हो गए। सब सामान अधिकारों के मालिक होकर बन्धुत्व के बन्धन में बँध गए।

इस्लाम की इस ख़ूबी से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। बरनार्डशा, जो किसी मसले के सारे ही पहलुओं का गहराई के साथ जायज़ा लेनेवाले व्यक्ति थे, उन्होंने इस्लाम के उसूलों का विश्लेषण करने के बाद कहा था—

> "दुनिया में बाक़ी और क़ायम रहने वाला दीन यदि कोई है तो वह केवल इस्लाम है।"

नबी *(सल्ल.)* को हम क्यों एक महान पुरुष मानते हैं और क्यों हम उनकी प्रशंसा और बड़ाई करते हैं?

आज 1957 ई. में जब हम मानव-चिन्तन को जागृत करने और जनता को उनकी ख़ुदी से अवगत कराने की थोड़ी-बहुत कोशिश करते हैं तो कितना विरोध होता है। चौदह सौ साल पहले जब नबी *(सल्ल.)* ने यह संदेश दिया कि बुतों को ख़ुदा न बनाओ। अनेक ख़ुदाओं को पूजनेवालों के बीच खड़े होकर यह एलान किया कि बुत तुम्हारे ख़ुदा नहीं हैं। उनके आगे सिर मत झुकाओ। सिर्फ़ एक स्रष्टा ही की उपासना करो।

इस एलान के लिए कितना साहस चाहिए था, इस सन्देश का कितना विरोध हुआ होगा! विरोध के तूफ़ान के बीच पूरी दृढ़ता के साथ आप *(सल्ल.)* यह क्रान्तिकारी सन्देश देते रहे, यह आप *(सल्ल.)* की महानता का बहुत बड़ा सुबूत है।

यह दृढ़ता जो नबी *(सल्ल.)* के अन्दर थी उसका अनुसरण आज भी इस्लाम के अनुयायी करते हैं।

इस्लामी जीवन-प्रणाली इनसानों में एकता पैदा करती है। इनसानों के अन्दर जागृति लाती है। इनसानों में बन्धुत्व और प्रेम के सम्बन्ध पैदा करती है।

जबकि आम धर्म इनसानों में पक्षपात के भावों को बढ़ावा देते हैं। एक को दूसरे से लड़ाते हैं। यहाँ तक कि पुलिस को हस्तक्षेप करना पड़ता है। इसके विपरीत यह जीवन-सिद्धान्त और यह जीवन प्रणाली मुहब्बत और प्रेम की बुनियाद पर इनसानों को संगठित कर देती है।

धर्म और सही जीवन-प्रणाली में अन्तर नहीं हो सकता। अन्तर उस समय होता है जबकि धर्म की कल्पना अपूर्ण और सीमित हो। यहाँ तक कि यह समझ लिया जाए कि धर्म का सम्बन्ध जीवन की आम समस्याओं और मामलों से नहीं होता।

सत्य-धर्म को, जो स्वयं एक जीवन-प्रणाली है, अगर व्यावहारिक रूप दिया जाए तो उससे इनसानों को फ़ायदा ही पहुँचेगा, नुक़सान नहीं। इसके लिए एक ऐसा वातावरण बनाना होगा जहाँ यह जीवन-प्रणाली स्वस्थ रूप से अपना कार्य कर सके। और जहाँ वह इनसानों को न्याय, आदर-सम्मान, सुख-शांति और वह सब कुछ दिला सके जिसके वे ज़रूरतमन्द हैं।

माहौल इनसान बनाता है। जैसा माहौल होता है आमतौर से लोग उसी के अनुसार अपने को ढाल लेते हैं। जनता यह नहीं सोचती कि माहौल किसी जीवन-प्रणाली के स्वस्थ रूप से क्रियान्वित होने के लिए अवसर देता है या नहीं। वे तो भेड़ की तरह आँखें बन्द करके चलते हैं।

बड़े लोग वे होते हैं जो इस बात का पता लगाते हैं कि माहौल की दिशा ठीक है या नहीं। जब वे देखते हैं कि माहौल की दिशा ग़लत है

तो वे उसकी विपरीत दिशा में चलने लगते हैं। इसकी परवाह नहीं होती कि वह विपरीत दिशा अपनाने से उन्हें सख़्त नुक़सान पहुँच सकता है। सच्ची और सही जीवन-प्रणाली को पूर्ण रूप से व्यावहारिक रूप देने के लिए वे विपरीत दिशा में चलने का दृढ़ निश्चय करते हैं और उस दिशा में चल पड़ते हैं, यहाँ तक कि ग़लत माहौल को एक अच्छे माहौल में बदलकर रख देते हैं। तकलीफ़ें झेलने और मुसीबतों का शिकार होने के बावजूद जो लोग सत्य-मार्ग पर चलने का साहस रखते हैं, वास्तव में वही काम के आदमी हैं। ऐसे ही साहसी लोग वक़्त से टक्कर लेकर एक ऐसे माहौल का निर्माण कर रहे हैं जिसमें सही जीवन-प्रणाली को व्यावहारिक रूप दिया जा सके।

हज़रत मुहम्मद *(सल्ल.)* की गणना ऐसे ही महान और साहसी व्यक्तियों में होती है। बल्कि आप *(सल्ल.)* की महानता आम बड़े व्यक्तियों से बढ़कर सामने आई है।

ऐसे महान पुरुष की शिक्षाओं को देश में आम करना चाहिए। इन शिक्षाओं को आम करने के लिए अच्छा माहौल चाहिए और अच्छे माहौल के निर्माण के लिए अच्छी शिक्षा की व्यवस्था का होना अनिवार्र्य है। अच्छी शिक्षा की व्यवस्था उसी समय संभव है, जबकि हुकूमत अच्छी हो, और हम किसी अच्छी हुकूमत की कल्पना भी नहीं कर सकते जब तक कि अच्छे शासक न हों। ये अच्छे शासक अच्छे लोगों ही से मिल सकते हैं। इससे भले और नेक लोगों के महत्व और उनकी ज़रूरत का भलीभाँति अनुमान लगाया जा सकता है। ऐसे लोग ही वास्तव में किसी समाज की असल पूँजी होते हैं जिनपर समाज का भविष्य निर्भर करता है। ऐसे लोगों की क्षति मानवता का सबसे बड़ा नुक़सान है।

इस्लाम हीरे के समान है। हीरे का इस्तेमाल लोग विभिन्न ढंग से करते हैं। कोई उसे अँगूठी में जड़ लेता है तो कोई ज़ेवरात में और कोई उसे बेचकर प्राप्त हुई रक़म को भोग-विलास में उड़ा देता है।

हीरे के महत्व और लाभ या उसकी क्षति का सम्बन्ध वास्तव में इससे है कि इनसान उसे किस तरह प्रयोग करता है। हमें सोचना चाहिए कि हीरे से कहीं ज़्यादा मूल्यवान और महत्वपूर्ण जीवन-प्रणाली के साथ

हमारा व्यवहार क्या है।

क्या यह धर्म अत्याचारियों या दुष्टों का साथ देगा? क्या यह मजबूरों का हक़ मारेगा? या इसके विपरीत यह धर्म उत्पीड़ितों और शोषित लोगों की मदद करेगा?

व्यवहार की दुनिया में अगर पहली क़िस्म के परिणाम ही सामने आ रहे हों तो चाहे हम इस्लाम की कितनी ही प्रशंसा और बड़ाई करते रहें, इसका कोई महत्व नहीं। हाँ, अगर परिणाम दूसरी सूरत में दिखाई दे रहे हों तो अवश्य ही लोग यह मान सकते हैं कि यह प्रणाली दुनिया के लिए रहमत होगी।

इस्लाम अपनी सारी ख़ूबियों और चमक-दमक के साथ हीरे की तरह आज भी मौजूद हैं। अब इस्लाम के अनुयायियों का यह कर्त्तव्य है कि वे इस्लाम धर्म को सच्चे रूप में अपनाएँ। इस तरह वे अपने रब की प्रसन्नता और ख़ुशी भी हासिल कर सकते हैं, ग़रीबों और मजबूरों की परेशानी भी हल कर सकते हैं और मानवता भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास की ओर तीव्र गति से आगे बढ़ सकती है।

इस्लाम : संसार की सुप्रसिद्ध विभूतियों की दृष्टि में

हमारे यहाँ के बुद्धिजीवी अन्नादुराई ने प्यारे नबी मुहम्मद *(सल्ल.)* को जिस आदर की दृष्टि से देखा, उसका उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं। केवल अन्नदुराई ही नहीं, बल्कि दुनिया के विभिन्न देशों के विद्वानों और विचारकों ने नबी *(सल्ल.)* की महानता को स्वीकार किया है। नेपोलियन से लेकर इन्साइक्लोपेडिया ऑफ़ ब्रिटानिका के सम्पादकों तक सभी ने हज़रत मुहम्मद *(सल्ल.)* की सेवा में श्रद्धांजलि प्रस्तुत की है।

नेपोलियन ने कहा था—

"वह दिन दूर नहीं कि सारे ही देशों के नीतिज्ञ मिलकर क़ुरआन के सिद्धान्तों के अनुसार एक ही ढंग के शासन को अपनाएँगे। क़ुरआन की शिक्षाएँ और उसके सिद्धान्त सत्य पर आधारित हैं, मानव-जाति को खुशियों और खुशहालियों से मालामाल करनेवाले हैं। अतः खुदा के भेजे हुए रसूल मुहम्मद *(सल्ल.)* और उनपर अवतरित किताब क़ुरआन पर मुझे गर्व है और मैं आप *(सल्ल.)* की सेवा में श्रद्धांजलि पेश करता हूँ।"

गाँधी जी ने कहा—

"क़ुरआन का अनेक बार मैंने ध्यानपूर्वक अध्ययन किया। सच्चाई और अहिंसा की शिक्षा उसमें देखकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हुई।"

डॉ. सेमुअल जॉनसन अपनी जगत-प्रसिद्ध पुस्तक 'ओरियन्टल रीलीजेन्स' में लिखते हैं—

"क़ुरआन न गद्य है, न पद्य, फिर भी वह अपने अन्दर गद्य का ज़ोर भी रखता है और पद्य का सौन्दर्य भी। वह न इतिहास है, न किसी की जीवन-चर्या, फिर भी नसीहत और शिक्षा की दृष्टि से वह सबसे ज़्यादा प्रभावकारी है।"

हज़रत मूसा को तौरात एक ही समय में मिली थी, लेकिन क़ुरआन

एक ही समय अवतरित नहीं हुआ और न एक ही समय पेश किया गया। प्लेटो की किताब में सर्वेक्षण और खोज का तरीक़ा अपनाया गया है। लेकिन क़ुरआन का तरीक़ा और उसकी शैली स्वयं उसकी अपनी है। वह एक आह्वानकर्त्ता की पुकार है। हिकमतों से भरी हुई, जिद्दोजुहद की स्प्रिट और अमल का जोश भर देनेवाली किताब, अपने सन्देश का विरोध करनेवालों को चुनौती देनेवाली किताब, दर्द और सहानुभूति के साथ उन्हें समझानेवाली किताब– वह इतनी ज्ञानपूर्ण तथा व्यापक पुस्तक है कि हर देश और हर ज़माने के लोग, जाने-अनजाने, चाहे-अनचाहे उसकी शिक्षाओं के प्रभाव में अपने को रखने पर विवश हैं। उसकी प्रतिध्वनि सदनों में भी सुनी जा रही है और रेगिस्तानों में भी, नगरों में भी सुनी जा रही है और देहातों में भी। बिना किसी भेद-भाव के हर एक पर इसकी छाप पड़ रही है।

सबसे पहले इस किताब ने अपने सन्देश को अपनानेवाले के दिलों को गरमाया। फिर उनको एक सामूहिक आन्दोलन में परिवर्तित किया। यह आन्दोलन तूफ़ान की तरह उठा और ईरान तथा एशिया के विभिन्न देशों से गुज़रता हुआ दूर तक जा पहुँचा। वहाँ जो भी निर्माणात्मक विचारधाराएँ मौजूद थीं, उनको इस आन्दोलन ने अपने अन्दर समो लिया और अन्धकारों में भटकानेवाले ईसाई-यूरोप को ज्ञान और बुद्धिमत्ता की सीख दी।

क़ुरआन मजीद के पहले अंग्रेज़ी अनुवादक मिस्टर राडुवेल ने अपनी भूमिका में क़ुरआन मजीद की प्रशंसा इस प्रकार की है–

> ''अरब के जाहिल, अनघढ़ और असभ्य लोगों को एक थोड़ी-सी अवधि में दुनिया के नेतृत्व और शासन के योग्य इस किताब ने बनाया। मानो किसी ने जादू की छड़ी घुमा दी और एक महान क्रान्ति अरबों में तुरन्त आ गई।''

पहली जनवरी 1945 ई॰ को श्रीमति सरोजनी नायडू ने मुस्लिम इन्स्टीट्यूट हाल ऑफ़ कलकत्ता में अपनी श्रद्धांजलि इन शब्दों में पेश की–

> ''क़ुरआन मजीद शिष्टाचार और न्याय का घोषणा-पत्र है।

आज़ादी का चार्टर है। व्यावहारिक जीवन में सत्य एवं न्याय की शिक्षा देनेवाली क़ानून की महान पुस्तक है।"

क़ुरआन के अलावा कोई अन्य धार्मिक पुस्तक जीवन के सारे ही मामलों और पहलुओं की व्यावहारिक व्याख्या और हल पेश नहीं करती।

जर्मनी के विद्वान गोयटे ने कहा—

"जब भी मैं क़ुरआन को देखता हूँ, नए-नए माने वह खोलता चला जाता है। यह किताब अपने पढ़नेवालों को धीरे-धीरे अपनी ओर खींचती जाती है और अन्ततः उसके मन-मस्तिष्क पर छा जाती है।"

प्रसिद्ध इतिहासकार गिब्न ने इन शब्दों में अपनी श्रद्धा प्रकट की है—

"एकेश्वरवाद को स्पष्ट शब्दों में बयान करनेवाली और दिलों पर एकेश्वरवाद की छाप लगानेवाली महान पुस्तक क़ुरआन मजीद है।"

इनसाइक्लोपीडिया आफ़ ब्रिटानिका के सम्पादक लिखते हैं—

"दुनिया में सबसे ज़्यादा पढ़ी जानेवाली और कंठस्थ की जानेवाली पुस्तक क़ुरआन है। यह विशेषता दुनिया की अन्य किसी भी धार्मिक पुस्तक को प्राप्त नहीं है।"

तुमसा हम किसे पाएँगे

मुसलमान जाहिल हैं, ज़िद्दी और ग़ुस्सावर हैं। ज़ालिम और घमण्डी होते हैं। ये बातें आम तौर से ग़ैर-मुस्लिम भाइयों में फैली हुई हैं।

पता लगाया जाए और निकट जाकर देखा जाए तो एक-दूसरी ही हक़ीक़त, सूरज से ज़्यादा चमकदार, सामने आती है।

इस्लाम के माने ही हैं 'शांति और सलामती' जहाँ तक मेरा अध्ययन है, नर्मी, आवेशों पर नियन्त्रण और सहनशीलता का अगर कोई बेहतरीन नमूना हैं तो मुहम्मद *(सल्ल.)* ही हैं।

यूँ तो सभी सदाचारी पुरुष और सुधारकगण उच्च गुणों से सुसज्जित होते हैं लेकिन मानव इतिहास में मुहम्मद *(सल्ल.)* जैसा बहुगुण सम्पन्न व्यक्तित्व नहीं मिलता। इसका एलान मैं अपने दिल की गहराइयों से करता हूँ।

आप *(सल्ल.)* अरब के शासक होते हुए भी अपना काम स्वयं कर लेते थे। अपने जूते आप *(सल्ल.)* स्वयं गाँठते थे। अपने कपड़ों का पेबन्द अपने कर कमलों से खुद लगाते थे। पशुओं को अपने हाथों से चारा देते थे और अपने हाथों से दूध दूहते थे।

दूध पान करनेवाले और दूध ही में नहानेवाले शासकों को तो दुनिया जानती है, लेकिन दूध दूहनेवाले एकमात्र शासक आप *(सल्ल.)* हैं।

दक्षिणी भारत का एक क़िस्सा है। एक ऋषि ने वाइगई नदी की मिट्टी ढोई। और उन्होंने यह कार्य मज़दूरी के लिए किया था, लेकिन जब इस बात का पता राजा को लगा तो जिस व्यक्ति ने ऋषि के सिर पर मिट्टी रखवाई थी, उस व्यक्ति को राजा ने कठोर दण्ड दिया।

लेकिन हम देखते हैं कि मदीना की मस्जिद के निर्माण के लिए काम करनेवालों में हज़रत मुहम्मद *(सल्ल.)* भी शरीक रहे। यह इतिहास की अनोखी मिसाल है।

आप *(सल्ल.)* का बिस्तर भी सादा ही था। चटाई या चमड़े पर आप लेटते थे और कभी तो ज़मीन पर ही आप *(सल्ल.)* आराम करते थे।

आप *(सल्ल.)* का मकान भी कच्ची मिट्टी का बना हुआ था। खजूर के पत्ते उसकी छत थे। आप *(सल्ल.)* दुनिया को त्याग देनेवाले संन्यासी नहीं थे, बल्कि समय के शक्तिशाली शासक थे, फिर भी आप *(सल्ल.)*

की यह सादगी और यह नम्रता! इस कल्पना ही से दिल की अजीब दशा होती है।

हमेशा हँसमुख चेहरा लिए हुए, न झुंझलानेवाले, न ग़ुस्सा करनेवाले, न क़हक़हा लगानेवाले। हर व्यक्ति के काम आनेवाले, प्रतिष्ठित चाल चलनेवाले, किसी के सलाम की प्रतीक्षा किए बिना हर व्यक्ति को आगे बढ़कर सलाम करनेवाले, बड़ों को उनके आदर में नहीं, बल्कि छोटों को भी स्नेह से सलाम में पहल करनेवाले।

कोई पुकारनेवाला चाहे वह गिरा हुआ, कुचला हुआ, पीसा हुआ और दुनियावालों की निगाह में तुच्छ क्यों न हो, उसकी पुकार पर गर्मजोशी, तत्परता और दया-भाव के साथ उसकी मदद को दौड़नेवाले। यह है महान और उंच्च आचरण इस पाक नबी *(सल्ल.)* का!

नबी *(सल्ल.)* ने ज़िन्दगी भर न किसी को झिड़का, न किसी को धिक्कारा, न किसी को गाली दी।

बहुत सारे महापुरुषों का हाल हम जानते हैं कि वे बाहर दूसरों के लिए तो नम्र स्वभाव होंगे, धैर्यवान और संयमी नज़र आएंगे, लेकिन अपने बाल-बच्चों में, अपने नौकर-चाकर और अपने अधीनों के बीच सख़्ती करनेवाले, डाँटने-डपटनेवाले और कटु वचन होते हैं।

लेकिन प्यारे नबी की तो शान ही निराली है। जिस तरह वे दूसरों के बीच रहते थे वैसे ही मृदुल स्वभाव और सुशील अपने बाल-बच्चों, नौकर-चाकर और अधीनों के बीच में भी थे।

आप *(सल्ल.)* से मिलनेवाले जब हाथ मिलाने के लिए हाथ बढ़ाते तो उनका हाथ थामकर आप *(सल्ल.)* बात-चीत करते। आनेवाला जब तक अपना हाथ नहीं खींच लेता आप *(सल्ल.)* उसकी तरफ़ हाथ बढ़ाए रखते। साथियों के साथ चलते तो उनके हाथों में हाथ मिलाए हुए चलते। हर एक को प्रेम और आदर के साथ पुकारते। कोई आप *(सल्ल.)* से सख़्त शब्दों में बात करता तो आप *(सल्ल.)* धैर्य से काम लेते। आप *(सल्ल.)* लज्जा की प्रतिमूर्ति थे। शरीफ़ ख़ानदान की पाकदामन कुमारियों से बढ़कर आप *(सल्ल.)* लज्जावान थे।

ऐसे महान पुरुष को जिन सौभाग्यशालियों ने अपना रहनुमा बनाया है उन्हीं का नाम मुसलमान है। आप *(सल्ल.)* के अनुयायियों में आज भी इन गुणों की छाप पाई जाती है। यह सब इस महान नबी *(सल्ल.)* ही के कारण है।

नबी *(सल्ल॰)* की नम्रता और दृढ़ता

बहुत सारे धार्मिक गुरुओं के जीवन में हम ऐसे क्षण भी पाते हैं जब वे अल्लाह की मदद से निराश नज़र आते हैं। ये सभी लोग सदाचारी थे, लेकिन कठिन परिस्थितियों में कभी-कभी उनके मुख से ऐसे शब्द निकल जाते थे मानो ख़ुदा ने उनका साथ छोड़ा दिया है।

इन लोगों के जीवन में नर्मी तो नज़र आती है, लेकिन इसी के साथ कठिन हालात में अपने उसूलों पर जमाव और वह मज़बूती नज़र नहीं आती जो अभीष्ट है।

अरबी नबी *(सल्ल॰)* की शान देखिए, वे बातचीत में जितने नर्म थे, जिद्दोजुहद के मैदान में उतने ही गर्म थे, मुसीबतों और मुश्किलों में पहाड़ की तरह अटल नज़र आते हैं।

आप *(सल्ल॰)* की तौहीद की दावत को सुनकर ग़ुस्से से भड़क जानेवाले लोगों का एक प्रतिनिधिमंडल आप *(सल्ल॰)* के चचा अबू-तालिब के यहाँ गया और उनको चेतावनी दी कि या तो वे अपने भतीजे को समझाएँ कि वह इस दावत से रुक जाए या वे क़ौम और मुहम्मद के बीच से हट जाएँ, हम स्वयं मुहम्मद से निपट लेंगे।

स्थिति की गम्भीरता से अबू-तालिब चिन्तित हुए। मुहम्मद *(सल्ल॰)* को बुलाया और क़ुरैश के इरादों से उन्हें अवगत कराया, फिर प्रेम भरे शब्दों में यह मशविरा दिया कि इन हालात में आप कुछ नर्मी अपना लें। इस अवसर पर सच्चे नबी और महान पथ-प्रदर्शक का यह जवाब इनसानी दृढ़ता और निश्चय की मज़बूती का इतिहास में एक शानदार अध्याय है—

> 'अगर ये लोग मेरे दाहिने हाथ में सूरज और बाएँ हाथ में चाँद भी लाकर रख दें तब भी मैं अपनी इस दावत से नहीं रुकूँगा। मैं अपनी आख़िरी साँस तक इस दावत को पहुँचाने में कोई कमी न करूँगा।'

विरोधियों ने न जाने कितने दुख नबी *(सल्ल॰)* को दिए। कूड़ा

करकट आप *(सल्ल.)* पर फेंका, आप (सल्ल.) पर पत्थर बरसाए। नमाज़ की हालत में तो ऊँट की ओझ तक आप *(सल्ल.)* पर डाल दी। आप *(सल्ल.)* की हत्या के लिए हर क़बीले के एक-एक व्यक्ति ने नंगी तलवार लेकर आप *(सल्ल.)* के घर का घेराव कर लिया।

इन कठिन परिस्थितियों से नबी *(सल्ल.)* के अन्दर और मज़बूती पैदा होती गई। आप *(सल्ल.)* के क़दम ज़रा भी न डगमगाए।

रण-क्षेत्र में नबी *(सल्ल.)* को ललकारा गया। उस समय यही मृदुल स्वभाव इनसान पूरी दृढ़ता के साथ आगे बढ़ता हुआ दिखाई देता है। केवल 313 बहादुर आप *(सल्ल.)* के साथ थे, जबकि विरोधियों की संख्या इससे कई गुना थी। डटकर आप *(सल्ल.)* ने मुक़ाबला किया और कामयाब हुए।

रण-क्षेत्र में नबी *(सल्ल.)* ज़ख़्मी भी हुए। आप *(सल्ल.)* के गाल पर गहरा ज़ख़्म भी लगा। आप *(सल्ल.)* के दो दाँत भी शहीद हुए। एक गढ़े में आप *(सल्ल.)* गिर भी पड़े। फिर भी आप *(सल्ल.)* की दृढ़ता और मज़बूती में तनिक भी कमी न आई

मदीना का घेराव हुआ। भूख, उपवास और निर्धनता का मुँह भी देखना पड़ा, लेकिन किसी भी हालत में आप *(सल्ल.)* निराश न हुए। हर हाल में आशापूर्ण और सख़्त-से-सख़्त हालात में मज़बूती का पहाड़ साबित हुए।

यह तो उस महान नबी की हालत थी। नबी *(सल्ल.)* के साथियों का हाल भी कुछ ऐसा ही था। ये लोग कितने अत्याचारों का शिकार हुए। उनका मज़ाक़ उड़ाया गया। उनपर फब्तियाँ कसी गईं। उनपर कोड़े बरसाए गए। तपती हुई रेत पर उन्हें लिटाया गया, लेकिन इन सभी हालात में नबी *(सल्ल.)* के ये साथी पूरी शक्ति के साथ सत्य-मार्ग पर जमे रहे।

एकेश्वरवाद और एक ख़ुदा पर भरोसा उनकी दृढ़ता से स्पष्ट था। ये लोग आख़िरी साँस तक अपने उसूलों पर जमे रहे। जान चली गई, परन्तु ये अपने उसूलों से न हटे।

प्यारे नबी *(सल्ल.)* ने अपने अनुयायियों को जहाँ मृदुल स्वभाव होने

की शिक्षा दी, वहीं उसूलों में बे-लचक रवैया अपनाने की शिक्षा भी दी।

विरोधियों के हाथों नबी *(सल्ल.)* ने और आप *(सल्ल.)* के साथियों ने बहुत ज़ुल्म सहे। लेकिन हम देखते हैं कि मक्का विजय होने के अवसर पर जब आप *(सल्ल.)* और आप *(सल्ल.)* के साथी मक्का में विजयी के रूप में प्रवेश कर रहे थे तो उनपर न तो इस विजय का कोई नशा छाया हुआ था और न उनके दिलों में प्रतिशोध की कोई भावना थी, बल्कि इसके विपरीत दुनिया ने देखा कि आप *(सल्ल.)* का सिर विनम्रता से झुका हुआ था और आपकी दाढ़ी के बाल ऊँट के कोहान को छू रहे थे।

क़ुरैश काँप रहे थे कि हमने इन लोगों पर इतने भयानक अत्याचार किए हैं, आज हमारी गत क्या होगी?

प्यारे नबी (सल्ल.) की मुहब्बत भरी ज़बान से ये शब्द मोतियों की तरह झड़ रहे थे—

> लोगो! आज तुमसे कोई बदला नहीं लिया जाएगा, अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, वही दयावान और कृपाशील है। आज तुम सब स्वतन्त्र हो।

आप (सल्ल.) ने उसको भी माफ़ कर दिया जिसने आपके एक चचा, जो एक जंग में शहीद हो गए थे, उनके कलेजे को निकाला था और उस स्त्री को भी जिसने उनके कलेजे को चबाने की कोशिश की थी। क्या मानव इतिहास इसका कोई उदाहरण पेश कर सकता है?

अहा! कितनी महानता और कितनी श्रेष्ठता की बात है यह!!

पाकी और सफ़ाई

अनभिज्ञ लोगों के अन्दर इस्लाम और मुसलमानों के बारे में बहुत-सी ग़लतफ़हमियाँ पाई जाती हैं। उनकी एक ग़लतफ़हमी यह भी है कि मुसलमानों में पाकी और सफ़ाई का कोई महत्व नहीं है। हम ऐसे सभी भाइयों से कहेंगे कि सर्वाधिक पाकी और सफ़ाई की शिक्षा देनेवाला अगर कोई धर्म है तो वह केवल इस्लाम है। प्यारे नबी *(सल्ल.)* के तरीक़े के अनुसार अगर बाह्य और अन्तर की पाकी और सफ़ाई अपना ली जाए तो सम्पूर्ण जगह स्वच्छता का नमूना बन जाए।

इस्लाम में हर रोज़ पाँच समय की नमाज़ फ़र्ज़ की गई है और नमाज़ स्वच्छता और सफ़ाई के बिना अदा ही नहीं होती। स्वच्छता और सफ़ाई को इस्लामी परिभाषा में 'तहारत' कहते हैं।

तहारत की तीन क़िस्में हैं–

1. जिस्म की पाकी,

2. कपड़ों की पाकी, और

3. जगह की पाकी।

पेशाब-पाख़ाने के बाद जिस्म को अत्यन्त स्वच्छ रखने की शिक्षा यही धर्म देता है। पेशाब के बाद पाकी के लिए ढेले और पानी के इस्तेमाल पर ज़ोर देता है।

रास्ता, तालाब और नदी के घाट, पेड़ की छाया, ईदगाह, मस्जिद, क़ब्रिस्तान और सार्वजनिक स्थलों आदि पर पाख़ाना-पेशाब करने से इस्लाम मना करता है।

इसके अतिरिक्त खड़े होकर पेशाब करने, पानी में पेशाब आदि करने या सवारी पर से शौच आदि करने से भी मना किया गया है। यह रोक विशेषकर पाकी और स्वच्छता को सामने रखते हुए ही लगाई गई है।

इस्लाम में पाकी और सफ़ाई का कितना अधिक ख़याल रखा गया है इसका अनुमान आप इस बात से भी कर सकते हैं कि इस्लाम ने

आदेश दिया है सुअर और कुत्ता आदि अपवित्र जानवरों का लुआब (राल) अगर किसी बर्तन से लग जाए तो उसे अच्छी तरह धोकर पाक करना चाहिए।

इसी तरह अगर कपड़े या बदन से ख़ून, पीप और गन्दगी वग़ैरह लग जाए तो उसे धोकर पाक करना चाहिए। अगर दूध-पीता बच्चा भी पेशाब कर दे तो पानी डालकर बदन और कपड़े को साफ़ करना ज़रूरी है।

नमाज़ की शर्तों में यह बात भी शामिल की गई कि नमाज़ अदा करने की जगह, मुसल्ला (अर्थात् जिस कपड़े को बिछाकर उसपर नमाज़ पढ़ी जाती है), नमाज़ पढ़नेवाले के कपड़े और उसका जिस्म भी पाक हो। नमाज़ी के लिए ज़रूरी है कि नमाज़ से पहले वह वुज़ू कर ले, और अगर नहाने की ज़रूरत हो तो नहाना भी उसके लिए ज़रूरी है।

नहाने में यह ज़रूरी है कि आदमी कुल्ली और ग़रारा भी करे और नाक में पानी डालकर उसे भी अच्छी तरह साफ़ करे और फिर पूरे शरीर पर पानी डालकर नहाए।

वुज़ू में भी कुल्ली करते हैं और नाक में पानी डालकर उसे साफ़ करते हैं। मुँह और हाथ-पैर धोते हैं और यह सब काम तीन-तीन बार किया जाता है।

हाथ भिगोकर, गर्दन और कानों पर फेरते हैं। इस सम्बन्ध में दाँतून की भी बड़ी ताकीद की गई है और उसका बड़ा फ़ायदा बताया गया है।

प्यारे नबी *(सल्ल.)* स्वयं स्वच्छता का बड़ा ख़्याल रखते थे। दाँत साफ़ करने के लिए आपकी दाँतून सदैव आपके तकिए के नीचे होती थी। हर जगह थूकने को आप पसन्द नहीं करते थे। अगर कोई ऐसी जगह थूक देता जहाँ नहीं थूकना चाहिए था तो आप (सल्ल॰) आगे बढ़कर स्वयं उसको साफ़ कर देते थे। आप *(सल्ल.)* अपने रहने की जगह को दर्पण की तरह साफ़ रखते थे। आप *(सल्ल.)* के वस्त्र सादा होते थे मगर पाक-साफ़।

"पाकी और स्वच्छता ईमान का अंश है"— यह नबी *(सल्ल.)* का कथन है।

इस्लाम में औरत का स्थान

इस्लाम और मुसलमानों के सम्बन्ध में जो ग़लतफ़हमियाँ पाई जाती हैं उनमें से कुछ ग़लतफ़हमियाँ औरतों के बारे में हैं।

इस्लाम से पहले आमतौर से हर समाज और सोसाइटी में औरत को हीन समझा जाता था। उसका अपमान किया जाता और तरह-तरह के अत्याचारों का उसे निशाना बनाया जाता था।

● भारतीय समाज में पति के मर जाने पर पति की लाश के साथ पत्नी को भी ज़िन्दा जल जाना पड़ता था।

● चीन में औरत के पैर में लोहे के तंग जूते पहनाए जाते थे।

● अरब में लड़कियों को जीवित गाड़ दिया जाता था।

इतिहास गवाह है कि इन अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ उठानेवाले सुधारक निकटवर्ती युग में पैदा हुए हैं, लेकिन इन सभी सुधारकों से शताब्दियों पहले अरब देश में प्यारे नबी *(सल्ल.)* औरतों के हितैषी के रूप में नज़र आते हैं और औरतों पर ढाए जानेवाले अत्याचारों का ख़ात्मा कर देते हैं।

औरत के अधिकारों से अनभिज्ञ, अरब समाज में प्यारे नबी *(सल्ल.)* ने औरत को मर्द के बराबर दर्जा दिया। औरत का जायदाद और सम्पत्ति में कोई हक़ न था, आप *(सल्ल.)* ने विरासत में उसका हक़ निश्चित किया। औरत के हक़ और अधिकार बताने के लिए क़ुरआन में निर्देश उतारे गए।

माँ-बाप और अन्य रिश्तेदारों की जायदाद में औरतों को भी वारिस घोषित किया गया। आज सभ्यता का राग अलापनेवाले कई देशों में औरत को न जायदाद का हक़ है, न वोट देने का। इंग्लिस्तान में औरत को वोट का अधिकार 1928 ई॰ में पहली बार दिया गया। भारतीय समाज में औरत को जायदाद का हक़ पिछले कुछ सालों में हासिल हुआ।

लेकिन हम देखते हैं कि आज से चौदह सौ वर्ष पूर्व ही ये सारे हक़ और अधिकार नबी *(सल्ल.)* ने औरतों को प्रदान किए। कितने बड़े उपकारकर्त्ता हैं आप *(सल्ल.)*!

नबी *(सल्ल.)* की शिक्षाओं में औरतों के हक़ पर काफ़ी ज़ोर दिया गया है। आप *(सल्ल.)* ने ताकीद की कि लोग इस कर्त्तव्य से ग़ाफ़िल न

हों और न्यायसंगत रूप से औरतों के हक़ अदा करते रहें। आप *(सल्ल.)* ने यह भी नसीहत की है कि औरत को मारा-पीटा न जाए।

औरत के साथ कैसा बर्ताव किया जाए, इस सम्बन्ध में नबी *(सल्ल.)* की बातों का अवलोकन कीजिए :

(1) अपनी पत्नी को मारनेवाला अच्छे आचरण का नहीं है।

(2) तुममें से सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति वह है जो अपनी पत्नी से अच्छा सुलूक करे।

(3) औरतों के साथ अच्छे तरीक़े से पेश आने का ख़ुदा हुक्म देता है, क्योंकि वे तुम्हारी माँ, बहन और बेटियाँ हैं।

(4) माँ के क़दमों के नीचे जन्नत है।

(5) कोई मुसलमान अपनी पत्नी से नफ़रत न करे। अगर उसकी कोई एक आदत बुरी है तो उसकी दूसरी अच्छी आदत को देखकर मर्द को ख़ुश होना चाहिए।

(6) अपनी पत्नी के साथ दासी जैसा व्यवहार न करो। उसको मारो भी मत।

(7) जब तुम खाओ तो अपनी पत्नी को भी खिलाओ। जब तुम पहनो तो अपनी पत्नी को भी पहनाओ।

(8) पत्नी को ताने मद दो। चेहरे पर न मारो। उसका दिल न दुखाओ। उसको छोड़कर न चले जाओ।

(9) पत्नी अपने पति के स्थान पर समस्त अधिकारों की मालिक है।

(10) अपनी पत्नियों के साथ जो अच्छी तरह बर्ताव करेंगे, वही तुममें सबसे बेहतर हैं।

इतने अधिकार प्रदान करके औरत को बिल्कुल आज़ाद भी नहीं छोड़ा, बल्कि उसे कुछ बातों का पाबन्द भी किया :

(1) औरत इस तरह रहे कि जब उसका पति उसे देखे तो ख़ुश हो जाए। जब कोई हुक्म दे तो उसे पूरा करे। पति अगर दूर हो तो उसकी सम्पत्ति और अपने सतीत्व की सुरक्षा करे। ऐसी ही स्त्री आदर्श पत्नी समझी जाएगी।

(2) सुशील पत्नी का मिल जाना अमूल्य पूँजी के बराबर है।

(3) जो पाँचों समय की रोज़ाना नमाज़ पढ़े, रमज़ान के रोज़े रखे और अपने पति का कहा माने तथा अपने सतीत्व की सुरक्षा करे, ऐसी

औरत जिस रास्ते से चाहे जन्नत में प्रवेश करे।

(4) दुनिया की सारी दौलत से ज़्यादा क़ीमती चीज़ पाक दामन बीवी है।

इस तरह प्यारे नबी *(सल्ल.)* ने औरतों को अधिकार भी दिए और उन्हें उनके कर्त्तव्यों से भी बाख़बर किया।

किसी को आपत्ति हो सकती है कि औरतों को इतने सारे अधिकार प्रदान करनेवाले इस्लाम में बहुपत्नीवाद क्यों है? क्या यह औरतों पर खुला ज़ुल्म नहीं है।

इस सिलसिले में हमें इतिहास, पुरुष के स्वभाव और ज़िन्दगी के व्यावहारिक मसलों को सामने रखना होगा।

हिन्दुस्तान के राजा दशरथ के कई पत्नियाँ थीं। इसी तरह कृष्ण जी को भी हम रुक्मिणी, सत्यबा और राधा के अलावा असंख्य गोपियों के बीच देखते हैं।

बल्ली औरतों के साथ मरगन जैसे देवता को हम ऐश करते हुए पाते हैं।

यह तो थी प्राचीन काल और पुराणों की बात, अब ऐतिहासिक घटनाओं को लीजिए।

बड़े-बड़े राजाओं के यहाँ एक से अधिक पत्नियाँ होती थीं। तमिलनाडू के कट्टा बम्मन के घर में कई पत्नियाँ थीं।

आज भी कुछ राजनेता कई पत्नियाँ रखते हैं।

इस्लाम से पहले अरब में पत्नियों की संख्या पर कोई हदबन्दी नहीं थी। प्यारे नबी *(सल्ल.)* ने मर्द के स्वभाव और अमली ज़रूरतों को ध्यान में रखकर इस असीम संख्या को चार तक सीमित रखा।

इस्लाम से पहले अरब दुनिया में शादी-विवाह का कोई विशेष नियम और सिद्धान्त न था। गरोहों और क़बीलों के बीच पत्नियाँ और दासियाँ रखने का रिवाज आम था। इसी तरह तलाक़ पर भी कोई पाबन्दी नहीं थी, जिसने जब चाहा तलाक़ दे दी। इन हालात के सुधार के लिए ख़ुदा के निर्देश आए। पत्नियों की संख्या को सीमित कर दिया गया और तलाक़ के सम्बन्ध में उचित नियमों और शिष्टाचार की पाबन्दी का हुक्म दिया गया। क़ुरआन में फ़रमाया गया—

"तुम्हें अगर आशंका हो कि यतीम बच्चों की परवरिश बग़ैर

शादी किए न हो सकेगी तो अपनी पसन्द की दो, तीन या चार औरतों से तुम विवाह कर सकते हो (यह आशंका हो कि उनके साथ भी तुम न्याय न कर पाओगे तो) एक औरत या दासी ही पर बस करो, अन्याय से बचने के लिए यह आसान तरीक़ा है।"
(क़ुरआन, 4 : 3)

क़ुरआन की इस हिदायत में जो हिकमतें और भलाइयाँ हैं उनपर भी विचार कीजिए। न्याय, इनसाफ़ तथा सच्चाई के साथ पत्नी से पेश आओ। बहुपत्नित्व की अनुमति भी है और इसी के साथ-साथ नाइनसाफ़ी से बचने की ताकीद भी। न्याय और इनसाफ़ सम्भव न हो तो एक ही शादी पर ज़ोर दिया गया है।

मर्द को किसी भी समय अपनी काम-तृष्णा की ज़रूरत पेश आ सकती है। इसलिए कि उसे ईश्वर ने हर हाल में हमेशा सहवास के योग्य बनाया है जबकि औरतों का मामला इससे भिन्न है।

माहवारी के दिनों में, गर्भावस्था में (नौ-दस माह), प्रसव के बाद के कुछ माह औरत इस योग्य नहीं होती कि उसके साथ उसका पति सम्भोग कर सके।

सारे ही मर्दों से यह आशा रखना सही न होगा कि वे बहुत ही संयम और नियन्त्रण से काम लेंगे और जब तक उनकी पत्नियाँ इस योग्य नहीं हो जातीं कि वे उनके पास जाएं, वे काम-इच्छा को नियन्त्रित रखेंगे। मर्द जायज़ तरीक़े से अपनी ज़रूरत पूरी कर सके, ज़रूरी है कि इसके लिए राहें खोली जाएँ और ऐसी तंगी न रखी जाए कि वह हराम रास्तों पर चलने पर विवश हो। पत्नी तो उसकी एक हो, आशना औरतों की कोई क़ैद न रहे। इससे समाज में जो गन्दगी फैलेगी और जिस तरह आचरण और चरित्र ख़राब होंगे इसका अनुमान लगाना आपके लिए कुछ मुश्किल नहीं है।

व्यभिचार और बदकारी को हराम ठहराकर बहुपत्नित्व की क़ानूनी इजाज़त देनेवाला बुद्धिसंगत दीन इस्लाम है।

एक से अधिक शादियों की मर्यादित रूप में अनुमति देकर वास्तव में इस्लाम ने मर्द और औरत की शारीरिक संरचना, उनकी मानसिक स्थितियों और व्यावहारिक आवश्यकताओं का पूरा ध्यान रखा है और इस तरह हमारी दृष्टि में इस्लाम बिल्कुल एक वैज्ञानिक धर्म साबित होता है। यह एक हक़ीक़त है, जिसपर मेरा दृढ़ और अटल विश्वास है।

क्या इस्लाम तलवार से फैला?

यह कहना कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैलाया गया है, केवल एक ग़लत दावा है जो पूर्णरूप से ग़लतफ़हमी पर आधारित है। आइए इस पहलू से भी हक़ीक़त का जायज़ा लें और सही नतीजे तक पहुँचने की कोशिश करें।

ईसाइयत और इस्लाम अपने आरम्भ काल में गुप्त प्रचार के द्वारा फैलाए गए।

हज़रत मसीह के बाद ईसाइयत का प्रचार उनके अनुयायियों ने किया।

लेकिन इस्लाम का प्रचार कुछ ही दिनों तक गुप्त रूप में हुआ, फिर खुल्लम-खुल्ला उसके प्रचार का हुक्म आ गया।

इस्लाम में ज़ोर-ज़बर्दस्ती की कोई गुंजाइशन नहीं, स्पष्ट रूप से इसका ऐलान किया गया है। अतः फ़रमाया गया, "दीन के मामले में कोई ज़ोर-ज़बर्दस्ती नहीं।" कोई कह सकता है कि अगर ऐसी ही बात है तो नबी *(सल्ल०)* ने लड़ाइयाँ क्यों लड़ीं और आपको तलवार क्यों उठानी पड़ी? हक़ीक़त यह है कि आप *(सल्ल०)* ने जो लड़ाइयाँ लड़ी हैं, उन्हें आक्रामक लड़ाई नहीं कह सकते। आप *(सल्ल०)* ने जो लड़ाइयाँ लड़ीं वे सुरक्षा के लिए लड़नी पड़ीं।

मक्कावासी मदीना के इस्लामी राज्य को नष्ट कर देने की योजना बनाकर निकले थे। यह मदीना वही है जिसने ख़ुदा के नबी (सल्ल०) को पनाह दी थी। इस्लाम की जीवन-प्रणाली को ख़त्म कर देने के लिए क़ुरैश ने जब हिंसात्मक कार्यवाही की तो नबी *(सल्ल०)* को उनसे संघर्ष करना पड़ा। इतिहास के बाद के युग में मुस्लिम शासकों ने जो लड़ाइयाँ लड़ी हैं, उनका इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं है।

हिन्दु राजा राजेन्द्रन ने जो जावा और सुमात्रा पर फ़ौजकशी की, वहाँ आज भी हिन्दू-संस्कृति का असर पाया जाता है, लेकिन इससे यह नतीजा निकालना सही न होगा कि राजा रामचन्द्र जी ने हिन्दु धर्म के

फैलाने के लिए फ़ौजकशी की थी।

यूरोप के ईसाइयों ने फ़ौजकशी की और पूर्वी देशों में अपना सम्राज्य स्थापित किया। इस साम्राज्य में ईसाइयत का प्रचार हुआ, लेकिन क्या आप यह कह सकते हैं कि इन देशों में ईसाइयत तलवार के ज़ोर से फैली है। फ़ौजकशी तो आम तौर से मुल्कगीरी के लिए होती है, फिर जिस देश में जिन लोगों का राज्य स्थापित हो जाता है, उन शासकों की नक़ल वहाँ की जनता करने लगती है और उनके धर्मों को अपनाने लगती है।

हिन्दुओं का एक पन्थ समनर पन्थ है। इस पंथ के लोगों का शासन जब तमिलनाडू में हुआ तो यहाँ समनर पंथ को उन्नति प्राप्त हुई। हिन्दुस्तान में जब बुद्ध शासक थे तो बुद्धमत को उन्नति मिली। इसी तरह जब शिवपंथी हिन्दू शासक हुए तो इस पंथ को लोकख्याति प्राप्त हुई और जब विष्णुपंथ के लोग सत्ता में आए तो इस मत को लोकप्रियता हासिल हुई। इससे यही मालूम होता है कि 'जैसा राजा वैसी प्रजा' की बात ही थी वरना धर्म के फैलाव से इन शासकों को न दिलचस्पी थी, न इस काम के लिए शासकों ने कभी लड़ाई ही लड़ी।

इतिहास में हमें कोई ऐसी घटना नहीं मिलती कि अगर किसी ने इस्लाम क़बूल करने से इनकार किया तो उसे केवल इस्लाम क़बूल न करने के जुर्म में क़त्ल कर दिया गया हो, लेकिन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट के बीच संघर्ष में धर्म की बुनियाद पर बड़े पैमाने पर ख़ून ख़राबा हुआ। दूर क्यों जाइए, तमिलनाडू के इतिहास ही को देखिए, मदुरै में ज्ञान समुद्र के काल में आठ हज़ार समनर मत के अनुयायियों को सूली दी गई, यह हमारा इतिहास है।

अरब में प्यारे नबी *(सल्ल.)* शासक थे तो वहाँ यहूदी भी आबाद थे और ईसाई भी, लेकिन आप *(सल्ल.)* ने उनपर कोई ज़्यादती नहीं की।

हिन्दुस्तान में मुस्लिम शासकों के ज़माने में हिन्दु धर्म को अपनाने और उसपर चलने की पूरी अनुमति थी। इतिहास गवाह है कि इन शासकों ने मन्दिरों की रक्षा और उनकी देखभाल की है।

मुस्लिम फ़ौजकशी अगर इस्लाम को फैलाने के लिए होती तो

दिल्ली के मुस्लिम सुल्तान के ख़िलाफ़ मुसलमान बाबर हरगिज़ फ़ौजकशी न करता। मुल्कगीरी उस समय की सर्वमान्य राजनीति थी। मुल्कगीरी का कोई सम्बन्ध धर्म के प्रचार से नहीं होता। बहुत सारे मुस्लिम उलमा और सूफ़ी इस्लाम के प्रचार के लिए हिन्दुस्तान आए हैं और उन्होंने अपने तौर पर इस्लाम के प्रचार का काम यहाँ अन्जाम दिया। उनका मुस्लिम शासकों से कोई सम्बन्ध न था। इसके सुबूत में नागोर में दफ़्न हज़रत शाहुल हमीद, अजमेर के शाह मुईनुद्दीन चिश्ती वग़ैरह को पेश किया जा सकता है।

इस्लाम अपने उसूलों और अपनी नैतिक शिक्षाओं की दृष्टि से अपने अन्दर बड़ी कशिश रखता है, यही वजह है कि इनसानों के दिल उसकी तरफ़ स्वतः खिंचे चले आते हैं। फिर ऐसे दीन को अपने प्रचार के लिए तलवार उठाने की आवश्यकता ही कहाँ शेष रहती है?

(नोट : इस विषय में और अधिक जानकारी के लिए पृष्ठ 77 भी देख लें।)

कम्युनिज़्म (साम्यवाद) से उत्तम और श्रेष्ठ है इस्लाम

पूँजीवाद की रीढ़ की हड्डी को तोड़नेवाली विचारधाराएँ दो हैं, एक कम्युनिज़्म और दूसरी इस्लाम।

यहाँ के कम्युनिस्टों में कुछ ही ने 'दास कैपिटल' का गहरा अध्ययन किया होगा। मार्क्स की एक थ्योरी है जिसका नाम है 'अतिरिक्त-मूल्य' (Surplus value)। इसी सिद्धान्त की व्याख्या मार्क्स ने किताब के तीन वृहद खण्डों में लिखी है।

कम्युनिज़्म का दावा है कि पूँजीपति अपनी पूँजी लगाता है, मज़दूर अपनी मेहनत से उस पूँजी में लाभ पैदा करता है। यह जो लाभ है, जो असल पूँजी से ज़्यादा होता है, इस ज़ायद आमदनी से पूँजीपति एक और कारख़ाना लगाता है और जनता का शोषण करता है। इस दावे के बाद कम्युनिज़्म आगे बढ़ता है और पूँजीवाद की असल शक्ति अर्थात इस 'अतिरिक्त मूल्य' को ख़त्म करने का निश्चय करता है। वह पूँजीवाद को मिटाकर पैदावार के सभी साधनों का राष्ट्रीयकरण कर लेता है।

सोचने की बात यह है कि उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करना क्या मसले का हल हो सकता है? राष्ट्रीयकरण किए हुए उद्योगों में भी 'अतिरिक्त मूल्य' या 'लाभ' सामने आएगा। सवाल यह है कि इस लाभ को कहाँ ले जाया जाए? और यह भी देखना चाहिए कि आज व्यवहारतः इस लाभ का क्या हो रहा है?

होता यह है कि पहले उद्योगों का राष्ट्रीयकरण किया जाता है। पैदा होनेवाले लाभ से मज़दूरों को कुछ हिस्सा दिया जाता है, बाक़ी जनता के लिए कुछ भी नहीं।

किसी उद्योग के लाभ में से केवल उसमें काम करनेवाले मज़दूरों ही को हिस्सा मिलता है, अन्य कारख़ानों में काम करनेवाले मज़दूरों या देश की ग़रीब जनता का उसमें कोई हिस्सा नहीं होता। राष्ट्रीयकरण का यह मतलब नहीं होना चाहिए था, बल्कि लाभ राष्ट्र के लोगों में विभाजित

होना चाहिए।

कम्युनिस्ट हुकूमत क़ानून के बल से लाभ को छीनकर दूसरों को दे देती है। इसके विपरीत इस्लाम में अतिरिक्त मूल्य या लाभ को दूसरों पर ख़र्च करने पर उभारा जाता है और इसकी ताकीद की जाती है। इस अमल के पीछे असल प्रेरक हुकूमत का दबाव नहीं, बल्कि अक़ीदे की ताक़त होती है।

कम्युनिस्ट देशों में उद्योग ही का राष्ट्रीयकरण होता है। लाभ के विभाजन की जो भी व्यवस्था होती है, इन्हीं में होती है। रही वह जायदाद जो लोगों के क़ब्ज़े में होती है, उससे प्राप्त होनेवाले लाभ के वितरण की कोई कल्पना तक नहीं है और न व्यवहारतः इसकी कोई व्यवस्था ही रखी गई है। जबकि इस्लाम लोगों की आमदनी की अतिरिक्त पूँजी को भी दूसरों पर ख़र्च करने की ताकीद करता है। इस अतिरिक्त पूँजी ही के हिस्से को जन-कल्याण के लिए निकालने और ख़र्च करने को 'ज़कात' का नाम देता है।

अरबी भाषा में 'ज़कात' के माने हैं, 'शुद्धिकरण' और 'पवित्रता'। अपनी आमदनी में से एक हिस्से को निकालना ज़कात है अर्थात् ज़कात देकर आदमी अपने माल को पवित्रता प्रदान करता है। ऐसा न किया जाए तो सारे का सारा माल अपवित्र हो जाता है। ऐसी उत्तम शिक्षा दुनिया में केवल इस्लाम ही ने दी है।

यहाँ कोई यह सवाल उठा सकता है कि अपने माल में से भलाई के लिए ख़र्च करने की शिक्षा तो धर्म की एक सिफ़ारिश है, कोई मालदार अगर धोखा देना चाहे तो आख़िर धोखा देने से उसे कैसे रोका जाएगा?

इस सवाल का जवाब हमें इतिहास में मिलता है। ज़कात न देनेवालों के ख़िलाफ़ इस्लाम के सर्वप्रथम ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ *(रज़ि.)* ने तलवार उठाई थी। हालाँकि ये ज़कात का इनकार करनेवाले बज़ाहिर मुसलमान और इस्लाम के अनुयायी थे। इस्लाम धर्म के माननेवालों और नबी *(सल्ल.)* पर ईमान रखनेवालों तथा नमाज़ के पाबन्द लोगों के विरुद्ध यह तलवार उठी थी। जिस अपराध के ये लोग अपराधी थे, वह एक संगीन अपराध था। अल्लाह पर ईमान के बाद जिस पहलू पर इस्लाम बहुत ज़्यादा ज़ोर देता है, वह है ज़कात। अपने माल से एक हिस्सा निकालकर अपने कमज़ोर भाइयों की मदद करना।

यहाँ यह बात ध्यान में रहे कि लोग अपनी निजी आमदनी और अपनी निजी पूँजी में से दूसरों पर ख़र्च करें, इसकी शिक्षा कम्युनिज़्म नहीं देता। लेकिन इस्लाम है कि इसकी ताकीद करता है कि इस प्रकार का ख़र्च अवश्य किया जाए। और अगर ऐसा ख़र्च कोई न करे, चाहे वह मुसलमान ही क्यों न हो, इस्लाम की तलवार उसके विरुद्ध उठ जाएगी।

इस्लाम कम्युनिज़्म से उत्तम और श्रेष्ठ है।

आम तौर पर पूँजीपति के मन में यह बात होती है कि उसकी पूँजी उसके आराम और राहत के लिए है, उसे दूसरों पर ख़र्च करना अपने लिए निर्धनता को बुलावा देना है। यही आशंका आम तौर से लोगों को सताती है।

इस्लाम सबसे पहले इस आशंका को जड़ से उखाड़ फेंकता है। क़ुरआन खुल्लम-खुल्ला कहता है कि ख़र्च करने से निर्धनता नहीं, सम्पन्नता आती है।

> "शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है और शर्मनाक नीति (कंजूसी) अपनाने की प्रेरणा देता है। मगर अल्लाह तुम्हें अपनी क्षमा और उदार कृपा की उम्मीद दिलाता है। अल्लाह बहुत ही समाईवाला और जाननेवाला है।"
>
> (क़ुरआन; 2 : 268)

कंजूसी क्या है? अपनी आवश्यकताओं पर, अपने बाल-बच्चों की ज़रूरतों पर और अन्य लोगों की आवश्यकताओं पर ख़र्च करने के बजाए पैसे को जोड़-जोड़कर रखते रहना।

तमिल फ़िल्मी जगत् में एक मशहूर गायक थे। वे बड़े कंजूस थे। उनके बेटे के पैर में ज़ख़्म हुआ तो उसके इलाज पर ख़र्च करने से भी वे कतराते रहे। नतीजा यह हुआ कि उनका लड़का चल बसा। यह है कंजूसी का नतीजा। इस तरह की कंजूसी और तंगी का इस्लाम सख़्ती से विरोध करता है।

इस्लाम ने केवल ख़र्च करने की शिक्षा ही नहीं दी है, बल्कि इसके साथ-साथ ख़र्च के शिष्ट तरीक़े भी सिखाए हैं। कुछ लोग ख़र्च तो करते हैं, लेकिन उनका उद्देश्य उपकार जताना या शोहरत हासिल करना होता है। यह और इस तरह के अन्य प्रेरकों को इस्लाम नाजायज़ ठहराता है

और इन्हें ख़त्म करता है। वह कहता है कि ख़र्च एक धार्मिक कर्त्तव्य है और नमाज़ के बाद इस्लाम का दूसरा बड़ा स्तम्भ है। अल्लाह की प्रसन्नता के सिवा तुम्हारे ख़र्च करने का कोई और उद्देश्य नहीं होना चाहिए। यही क़ुरआन की ताकीद है।

मैंने कुछ शहरों में देखा कि किसी व्यक्ति ने एक संस्था को ट्यूब लाइट दान की और उसपर देनेवाले का नाम इतने भोंडे तरीक़े से लिखा गया था कि रौशनी बाहर न आ सकी। इस्लाम कहता है कि इस तरह का ख़र्च और इस तरह का दान न सिर्फ़ ग़लत है, बल्कि सारी नेकियों को बर्बाद कर देनेवाला है। कुछ लोग दूसरों की आर्थिक सहायता या अन्य मदद तो करते हैं मगर अपने उपकार का दबाव मदद लेनेवाले पर इतना डालते हैं कि उसका दिल आहत होकर रह जाता है। ऐसी सारी हरकतों को इस्लाम हराम कहता है। क़ुरआन में है—

> "एक मीठा बोल और (किसी अप्रिय बात पर) क्षमा कर देना उस ख़ैरात से उत्तम है जिसके पीछे कष्टदायक बात हो।"
>
> (क़ुरआन, 2:263)

विनोबा भावे जब भूदान आन्दोलन चला रहे थे तो कुछ लोग अच्छी ज़मीन दान करनेवाले भी थे, मगर बहुत-से लोग बंजर और पथरीली ज़मीन ही दान कर रहे थे।

अपने घर के फटे-पुराने कपड़े, बासी खाना, टूटे-फूटे सामान दूसरों को देनेवाले 'दाता' भी दुनिया में पाए जाते हैं। फटे नोट और खोटे सिक्के दान करनेवाले दुनिया में मिल जाएँगे, लेकिन इस्लाम अपने पास की बेहतरीन चीज़ को दान में देने की शिक्षा देता है। अपने पसन्द के लिबास, अपने प्रिय खाने, अपनी मनचाही दौलत इन सबको अल्लाह की राह में ख़र्च करने की ताकीद करता है। आपकी कमाई में जो अति उत्तम चीज़ें हैं उन्हें आप अल्लाह की राह में ख़र्च करें, यह है इस्लाम की शिक्षा। क़ुरआन में है—

> "ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! जो माल तुमने कमाए हैं और जो कुछ हमने ज़मीन से तुम्हारे लिए निकाला है, उसमें से उत्तम भाग ख़ुदा की राह में ख़र्च करो। ऐसा न हो कि उसकी राह में देने के लिए बुरी चीज़ें छाँटने की कोशिश करने लगो।" (क़ुरआन, 2:267)

आप दूसरों को खाना, कपड़े या आर्थिक सहायता जो भी देते हैं, इस्लाम उसे छिपाकर देने को श्रेष्ठ बताता है। यद्यपि आवश्यकता पड़ने पर खुले तौर पर भी मदद की जा सकती है। क़ुरआन में है—

> "अगर तुम अपनी ख़ैरात ज़ाहिर करके दो तो यह भी अच्छा है, लेकिन छिपाकर ज़रूरतमन्दों को दो तो यह तुम्हारे हक़ में ज़्यादा बेहतर है।" (क़ुरआन; 2:271)

दान और ख़र्च के सम्बन्ध में एक स्थिति यह भी है कि एक फ़िज़ूलख़र्च और शराबी आपके पास मदद के लिए आता है। क्या आप उसकी मदद करेंगे? अगर मदद करेंगे तो यह मदद किस प्रकार की होगी? इस्लाम ने इन सवालों का भी जवाब दिया है। कार्य-भ्रष्ट और बुद्धिहीन के हाथों में रक़म न दी जाए, यह इस्लाम की शिक्षा है। फिर भी उनके खाने, कपड़े का प्रबन्ध किया जाए। क़ुरआन में है—

> "और अपने वे माल जिन्हें अल्लाह ने तुम्हारे लिए जीवन बाक़ी रखने का साधन बनाया है, नादान लोगों के हवाले न करो। हाँ उन्हें खाने और पीने के लिए दो और उन्हें नेक हिदायत करो।" (क़ुरआन; 4 : 5)

उनकी बुनियादी ज़रूरतों यानी खाने कपड़ों की फ़िक्र के बाद इस्लाम इस सिलसिले में जो निर्देश देता है, आइए उसपर एक हल्की सी नज़र डालें—

1. तुम्हारे और तुम्हारे बाल-बच्चों पर ख़र्च करने से जो बचा रहे, उसमें से ख़ुदा की राह में ख़र्च करो।

2. अपनी सामर्थ्य से बढ़कर ख़र्च न करो और न ही कंजूसी से काम लो। तुम्हारी नीति सन्तुलित हो।

3. ऐसा न करो कि ख़र्च से अपना हाथ बिल्कुल ही रोक लो और न हाथ को इतना खुला रखो कि स्वयं मदद के योग्य हो जाओ।

4. तुम्हारे अपने निर्धन रिश्तेदार, मुहताज, दरिद्र, यतीम और मुसाफ़िर ये तुम्हारी मदद के अधिकारी हैं।

अपने माल की ज़कात देना मुसलमान पर फ़र्ज़ है। इस फ़र्ज़ की अदायगी से ग़फ़लत और लापरवाही बरतनेवालों के लिए सख़्त चेतावनी

दी गई है। एक बार प्यारे नबी *(सल्ल.)* ने एक औरत के पास सोने के कंगन देखे। आप *(सल्ल.)* ने पूछा, "क्या तुम इसकी ज़कात देती हो?" महिला ने कहा, "नहीं!" तो नबी *(सल्ल.)* ने कहा कि आख़िरत में तुम्हें आग के कंगन पहनाए जाएँगे। (यह सुनकर महिला ने वे कंगन दान कर दिए।)

ज़कात की रक़म किन लोगों पर ख़र्च की जा सकती है, क़ुरआन में इसे स्पष्ट कर दिया गया है। ग़रीबों, मुहताजों, क़र्ज़-दारों, यतीमों और मुसाफ़िरों की मदद के अलावा ज़कात की रक़म किसी का दिल रखने के लिए भी ख़र्च की जा सकती है। इसी तरह ग़ुलामों को आज़ाद करने के लिए भी ज़कात की मद से ख़र्च कर सकते हैं। ऐसे ही क़ैदियों को क़ैद से आज़ादी दिलाने के लिए, ज़कात के पैसे काम में लाए जा सकते हैं। इसके अलावा जो लोग ज़कात की वुसूली आदि पर नियुक्त होंगे, उनका वेतन भी ज़कात से अदा किया जा सकता है। ज़कात ख़र्च करने की जगहों में एक 'अल्लाह की राह' भी है। अल्लाह की राह अपने माने और मतलब के लिहाज़ से बहुत व्यापक परिभाषा है। भलाई के सारे काम अल्लाह की राह के अंतर्गत आते हैं। विशेष रूप से दीन का प्रचार और उसका बोलबाला करने का प्रयत्न आदि अल्लाह की राह ही के अन्तर्गत आते हैं।

माँ-बाप और औलाद जिनकी ज़िम्मेदारी आदमी के ऊपर होती है, इनपर ज़कात की रक़म ख़र्च नहीं की जा सकती। माल के इस हिस्से को दूसरों के लिए ही निकालने का आदेश दिया गया है।

अब इस्लामी शिक्षाओं के एक अन्य पहलू को लीजिए। जितना सम्भव हो सके माँगने और हाथ फैलाने से बचने की इस्लाम ने ताकीद की है। आदमी को कोशिश इस बात की करनी चाहिए कि वह देनेवाला बने, न कि लेनेवाला। किसी के आगे हाथ फैलाने से बेहतर है कि आदमी लकड़ी काटे और उससे अपना गुज़ारा करे। यह नबी *(सल्ल.)* का कथन है।

एक बार एक देहाती को प्यारे नबी *(सल्ल.)* ने बुलाया और उसके हाथों को चूम लिया। उसके हाथ पर मेहनत और परिश्रम के निशान थे। वह अपना गुज़र-बसर करने के लिए मेहनत मज़दूरी करता है, इसी

लिए खुश होकर आप *(सल्ल.)* ने उसके हाथों को चूम लिया।

एक तरफ़ इस्लाम ने सवाल करने और माँगने से रोका है तो दूसरी तरफ़ खुशदिली के साथ दूसरों पर अपने माल ख़र्च करने का हुक्म दिया है। इससे अन्दाज़ा होता है कि इस्लाम की शिक्षा में अत्यन्त सौन्दर्य और सन्तुलन पाया जाता है।

कुछ स्पष्टीकरण

'इस्लाम जिससे मुझे प्यार है' पढ़कर कुछ सज्जनों ने मिस्टर अडियार से इस्लाम के बारे में कुछ प्रश्न किए और कुछ आपत्तियाँ भी। हम यहाँ वे प्रश्न और आपत्तियाँ और उनके उत्तर पाठकों की दिलचस्पी के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।

मुस्लिम देशों के आपसी झगड़े और इस्लाम

एक ग़ैर-मुस्लिम भाई ने सवाल किया कि आज हम देखते हैं कि मुस्लिम देश आपस में गुथ्थम-गुथ्था हैं। हालाँकि वे सब इस्लाम के माननेवाले हैं। फिर इस्लाम से प्यार होने का क्या मतलब है? इस सवाल का जवाब देते हुए मिस्टर अडियार ने कहा कि—

"जहाँ तक मैं समझता हूँ प्यार तो प्यार है। मुसलमान क्या करते हैं? इसका इससे कोई सम्बन्ध नहीं है। मुसलमानों की कोताहियों और कमियों को देखकर मैं इस्लाम की प्रशंसा करने से नहीं रुक सकता।" इस पर एक सज्जन बोले—

"अरब देशों के एक-दूसरे से युद्ध करने से क्या इस्लाम पर से यक़ीन नहीं उठ जाता?"

मिस्टर अडियार ने कहा—

"बज़ाहिर इस सवाल में वज़न महसूस होता है, लेकिन हक़ीक़त कुछ और है। यक़ीन उठ जाने के लिए कोई मज़बूत और ठोस बुनियाद चाहिए। हम देखते हैं कि चीन और वियतनाम दोनों ही कम्यूनिस्ट देश हैं, लाल झण्डों के अलमबरदार हैं, फिर भी दोनों में लड़ाई हुई। क्या भारत के कम्यूनिस्ट यह कहते हैं कि कम्यूनिज़्म पर से हमारा यक़ीन उठ गया है। ऐसा वे बिल्कुल नहीं कहेंगे। इसी तरह हम देखते हैं कि हिटलर और चर्चिल दोनों ईसाई थे। दोनों के नेतृत्व में जर्मनी और इंगलिस्तान में घमासान युद्ध हुआ। क्या इस युद्ध ने ईसाइयों के दिल से उनका ईमान और यक़ीन छीन लिया और उन्होंने ईसाइयत से मुँह मोड़ लिया? बिल्कुल नहीं। फिर देखिए, भारत के विभिन्न मन्दिरों में बार-बार झगड़े हुए तो क्या इससे मन्दिरों के पुजारी ईश्वर से बेज़ार होकर नास्तिक और अनीश्वरवादी हो गए?— हरगिज़ नहीं।

अगर ये बातें सही हैं तो मुस्लिम देशों के केवल आपस में टकराने के कारण इस्लाम से बे-इत्मीनानी का सवाल कहाँ से पैदा होता है?

ये तो विभिन्न देशों के झगड़े हैं, जिसका अक़ीदे और धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं। ये झगड़े आज हैं तो कल समाप्त भी हो सकते हैं। लेकिन अक़ीदा और यक़ीन आज भी बाक़ी है और कल भी बाक़ी रहेगा। यह बदलने और डाँवाडोल होनेवाली चीज़ नहीं है।

दुनिया में कम्युनिज़्म एक शक्ति की हैसियत रखता है और उसके मुक़ाबले में पूँजीवाद एक दूसरी शक्ति है। तीसरी शक्ति अगर दुनिया में कोई है तो वह शक्ति इस्लाम की है।

उपर्युक्त पहली दोनों शक्तियाँ अन्ततः तीसरी शक्ति के आगे नत-मस्तक होंगी। इतिहास का अध्ययन यही बताता है। भूतकाल का इतिहास भी, वर्तमान काल का इतिहास भी और भविष्य का इतिहास भी, सभी इसकी ओर संकेत करते हैं।

आज के सभी मुसलिम देश अत्यन्त निर्धन थे। लेकिन नबी *(सल्ल॰)* का ऐलान था कि 'अरब के मरुस्थल से दुनिया में रहमत फैलेगी!' हम देख रहे हैं कि आज वहाँ पत्थरों में से पेट्रोल निकल रहा है।

अरब अगर इस्लामी अक़ीदों पर और अधिक यक़ीन और अमल प्रकट करेंगे तो उनपर अल्लाह की कृपा दुनिया में भी बहुत ज़्यादा होगी।

प्यारे नबी *(सल्ल॰)* की ज़िन्दगी बे-दाग़ थी। इसी तरह ख़लीफ़ाओं की ज़िन्दगी भी। इतिहास के बाद के ज़मानों में कुछ नवाबों और बादशाहों के क़दम फिसले हैं, कुछ ग़लतियाँ उनसे हुई हैं लेकिन मुस्लिम उम्मत का दीन और अपने उसूलों पर अटल विश्वास रहा है। आरम्भ काल में उनकी संख्या लाखों में थी तो आज यह संख्या करोड़ों तक पहुँच गई हैं। इससे स्पष्ट है कि मुसलमानों और मुस्लिम देशों की कोताहियों और ग़लतियों से अक़ीदे के डावाँडोल होने का सवाल ही पैदा नहीं होता। लोगों की ग़लतियों से उसूल ग़लत नहीं हो जाते।

हक़ीक़त यह है कि दुनिया की गम्भीर समस्याओं का हल और दुनिया की मुसीबतों का इलाज इस्लाम ही है। सूरज अगर मन्द पड़ जाए तो रौशनी कहाँ से आएगी? समुद्र अगर नमकीनी खो दे तो नमक कहाँ से आएगा? स्रोत सूख जाए तो पानी की धारा कहाँ से आएगी?

इस्लाम अगर पराजित हो जाए तो दुनिया और मानव जाति कहाँ से अपने दुखों का इलाज पाएगी?"

इस्लाम में सज़ाएँ

आमतौर से ग़ैर-मुस्लिम भाइयों में यह बात मशहूर है और इसे ख़ूब फैलाया भी गया है कि मुसलमान निर्दयी होते हैं और उनके यहाँ सज़ाएँ भी ज़ालिमाना दी जाती हैं। चोरों का हाथ काट दिया जाता है और व्यभिचार पर पत्थरों से मार डालने की सज़ा दी जाती है। यह भी कहा जाता है कि मुसलमानों ने फ़ौजकशी करके मन्दिरों को ढाया है और ज़ुल्म व सितम किया है। इन्हीं सब बातों को लेकर कहा जाता है कि मुसलमान ज़ालिम और बे-रहम होते हैं।

ये आरोप लगाने से पहले लोगों को अपना दामन भी देखना चाहिए। फिर असल हक़ीक़त खुलकर सामने आ सकती है।

● बेटे ने बछड़े को मार डाला तो मनुस्मृति के आदेशानुसार चोलान (Cholan) ने अपने बेटे को फाँसी पर लटकाया। इस काम को आख़िर क्या कहा जाएगा?

● राजा के बाग़ से एक फल नदी में गिरकर बहता हुआ चला आया, उसको एक लड़की ने उठाकर खा लिया। नन्नन (Nunnen) नामक राजा ने इस अपराध में उस लड़की को क़त्ल की सज़ा दी।

● मशहूर कवि कंगी के पैर के कंगन को एक सुनार ने चुराया तो उस समय के सारे ही सुनारों को क़त्ल कर दिया गया।

● ज्ञाना समुन्दर नामक गुरू एक मठ में रहते थे। समनर नामक एक क़ौम के लोगों ने उस मठ को आग लगाने की कोशिश की, इस अपराध में उस क़ौम के आठ हज़ार लोगों को सूली दी गई।

● अय्यर नामक एक व्यक्ति को धर्म परिवर्तन करने के जुर्म में पत्थर से बाँधकर समुद्र में फेंक दिया गया। जब वह बच निकला तो उसे चूने की भट्टी में डाल दिया।

● तनालीरामन की घटनाओं में एक घटना यह भी है कि राजा के आदेश को न माननेवालों को ज़िन्दा दफ़न किया गया और कुछ को हाथी के पैरों तले कुचला गया।

● तमिलनाडु के तिरुमलाई और मैसूर के एक राजा के बीच जो लड़ाई हुई उसमें लोगों की नाक काट दी गई। मैसूर के शासक ने तमिलनाडू पर इन्तिक़ाम लेने ही के लिए फ़ौजकशी की थी और लोगों के होंठ और नाक काट डाले थे। फिर इसके जवाब में उस समय के तमिलनाडू के शासक ने मैसूर पर हमला किया और उसने अपने दुश्मनों के नाक और होंठ काटे। (नायक राजाओं के इतिहास की किताबों से लिया गया।)

● बच्चों का बलिदान करना, इनसानी अंगों की भेंट चढ़ाना, यह रिवाज आज भी हमारे देश में कई जगह पाया जाता है। आख़िर क्या ये दया और रहम दिली के कारनामे हैं?

● पश्चिमी जगत् में सूली देना एक आम बात रही है। हज़रत मसीह को सूली देने की कोशिश की गई। सेंट पीटर को उलटा लटकाकर सूली दी गई।

● जान ऑफ़ आर्क को ज़िन्दा जलाया गया।

● प्रोटेस्टेन्ट मत ग्रहण करनेवालों के सिर फोड़कर दिमाग़ को चूर्ण-विचूर्ण किया गया और उन्हें ज़िन्दा जलाया गया।

● ढोर-डंगर की तरह इनसानों को अफ़्रीक़ा से पकड़कर लाया गया और यूरोप के बाज़ारों में गुलाम बनाकर नीलाम किया गया— यह थी पश्चिम की सभ्यता।

● हिटलर ने गैस चैम्बर में अगणित व्यक्तियों को ख़त्म किया।

● आज भी भारत के विभिन्न क्षेत्रों से ये ख़बरें आती हैं कि फ़साद और दंगों में इनसानों को ज़िन्दा जलाया गया। वलीपुरम, जमशेदपुर और भेलसा, अहमदाबाद की घटनाएँ इसकी साक्षी हैं।

इस तरह दुनिया के हर देश का इतिहास ज़ुल्म और सितम की दास्तानों से दाग़दार दिखाई देता है। जहाँ विभिन्न दर्शनशास्त्रों की बुनियाद पर आदमी ने ज़ुल्म व सितम को वैध समझा है वहीं उसकी ओर से रहमदिली और दानशीलता भी सामने आई है। ज़ालिमाना और हिंसक विचारों को मिटाकर उनकी जगह सही अर्थों में दया की शिक्षा देनेवाला अगर कोई सच्चा धर्म है तो वह इस्लाम है।

कुछ धर्मों में ईश्वर के गुणों को विभाजित करके हर गुण का एक अलग ईश्वर माना जाता है। कुछ धर्म तो ऐसे हैं जिनमें ईश्वर को गुणों से ख़ाली समझा जाता है। लेकिन इस्लाम में ईश्वर सर्वथा दया दिखाई देता है। स्वयं प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद *(सल्ल.)* के आगमन को दया बतलाया गया है। क़ुरआन में ईश्वर को जगह-जगह दयावान और कृपाशील कहा गया है। अल्लाह को यह पसन्द है कि उसके गुण, दया और कृपा की छाप उसके बन्दों की ज़िन्दगी में भी पाई जाए।

इस्लाम की शिक्षा है कि प्रत्येक कार्य अल्लाह– दयावान, कृपाशील– के नाम से शुरू किया जाए। इस्लाम ने सलाम करने का जो तरीक़ा सिखाया है उससे भी दया और कृपा ही प्रकट होती है। वास्तविक मुसलमान दूसरों के लिए दयावान, कृपाशील और स्नेही होता है। क़ुरआन की शिक्षा यही है और नबी *(सल्ल.)* का आदर्श भी यही है। कुछ लोग अगर इस रहमदिली के रास्ते से फिसल जाते हैं तो इस्लाम उन्हें राह पर पलट आने की ताकीद करता है।

तुर्की में एक शासक सुलतान सलीम थे। वे अपने अधीनों से बड़ी सख़्ती से पेश आते थे। वे अपने देश की समस्त भाषाओं और सारे धर्मों को मिटाकर एक ही भाषा और एक ही धर्म को प्रचलित करने का इरादा रखते थे, लेकिन उस समय के इस्लामी विद्वानों के घोर विरोध के कारण सुलतान को अपनी यह योजना समाप्त कर देनी पड़ी।

तफ़रीह के लिए जानवरों या पक्षियों को आपस में लड़ाने का रिवाज विभिन्न देशों में आज भी पाया जाता है। इस्लाम ने इसे अत्यन्त निन्दित ठहराया है।

अदी-बिन-हातिम ने च्यूँटियों को ख़ुराक पहुँचाई, यह इस्लामी शिक्षा का असर था। सड़क पर चलने का अधिकार जानवरों को भी है, उन्हें हटाया नहीं जा सकता, शीराज़ी ने यह घोषणा की। इस प्रकार की घटनाएँ मुसलमानों के इतिहास में मिलती हैं।

ऊँट पर अगर तीन व्यक्ति सवार हों और ऊँट बोझ से दबा जाता हो तो सख़्ती के साथ एक को उतार दो। यह शिक्षा भी इस्लाम की है।

यह सही है कि दया की शिक्षा देनेवाला इस्लाम संगीन अपराधों पर अपराधियों को सख़्त सज़ाएँ देने का आदेश भी देता है। निस्सन्देह इस्लाम ने चोर का हाथ काटने का हुक्म दिया है। लेकिन इसके

परिणामों और प्रभाव को भी देखना चाहिए। जिन मुस्लिम देशों में यह क़ानून प्रचलित है, वहाँ चोरी की घटनाएँ नहीं के बराबर ही घटित होती हैं।

अरब देशों में क़ातिल की गर्दन तलवार से उड़ा दी जाती है। जब कि अन्य देशों में उसे फाँसी दी जाती है या बिजली की कुर्सी पर बिठाकर मौत की सज़ा देते हैं। सूली या बिजली के द्वारा बड़े कष्ट के साथ जान निकलती है। इसलिए तलवार से गर्दन मारकर मौत की सज़ा देने ही को बेहतर कहा जाएगा।

क्या मुसलमानों ने मन्दिरों को ढाया?

एक निराधार आरोप यह है कि मुसलमानों ने भारतीय मन्दिरों को ढाया है।

ऐसे आरोप लगाते समय हम भूल जाते हैं कि इस तरह की हरकतें स्वयं भारत में दूसरे लोगों ने भी की हैं। हमारे यहाँ समनर पंथवाले मन्दिरों को ढाया गया। हम यह भी भूल गए कि नाटा टीनम की मूर्तियों को लूटा गया और वहाँ जो सोना था उसे तिरुमगई स्थान के आशावार उठा ले गए।

हम यह तो कहते हैं कि मुसलमानों ने मन्दिर ढाए, लेकिन हम इसे भूल जाते हैं कि उन्होंने हिन्दू मन्दिरों को ज़मीनें वक़्फ़ कीं। मुसलमानों ने अगर कुछ मन्दिरों को ढाया है तो उसके कारण कुछ और रहे होंगे। इस्लाम की यह शिक्षा नहीं है कि दूसरों के उपासना-स्थलों को तबाह या बर्बाद किया जाए।

एक सज्जन ने जब यह पूछा कि भारत के इतिहास से यह बात मालूम होती है कि मुसलमानों ने मन्दिरों को ढाया और मूर्तियों को तोड़ा है। इसके बारे में आप क्या कहते हैं? इसपर अडियार जी ने कहा कि—

हक़ीक़त यह है कि भारत का जो इतिहास लोगों के हाथों में है, वह कोई सच्चा और तहक़ीक़ की रौशनी में तैयार किया हुआ इतिहास नहीं है। मुसलमानों और अन्य धर्मों के लोगों के बीच दुश्मनी पैदा करने के उद्देश्य से पश्चिम के उपद्रवियों ने यह इतिहास लिखा है। अगर यह साबित भी हो जाए कि मुसलमानों ने मन्दिरों को ढाया है और मूर्तियों को तोड़ा है तो मेरा जवाब यह होगा कि इस्लाम में दूसरे धर्मों के मन्दिरों को ढाने या उन्हें तोड़ने की बिल्कुल अनुमति नहीं है। इस काम

के करनेवाले चाहे महमूद ग़ज़नवी हों या उनकी फ़ौज, इसका इस्लाम से कोई ताल्लुक़ नहीं। बल्कि इस्लामी राज्य तो ग़ैर-मुस्लिमों के पूजा-स्थलों की रक्षा करने का ज़िम्मेदार है।

बुतों को पूजना ग़लत है। लोगों में यह चेतना इस्लाम पैदा करता है और इसके लिए वह स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करता है। धर्म के सम्बन्ध में कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं, यह घोषणा भी इस्लाम ने स्पष्ट शब्दों में की है। वह चाहता है कि लोगों के दिलों की दुनिया शिर्क और कुफ़्र से पाक हो और उसमें सत्य का प्रकाश फैल जाए। इसके लिए वह प्रचार-प्रसार और आमन्त्रण का तरीक़ा अपनाता है। ज़ोर-ज़बरदस्ती की नीति उसकी अपनी प्रकृति के बिल्कुल प्रतिकूल है।

प्यारे नबी *(सल्ल.)* ने काबा को बुतों से पाक किया है। यह एक ऐतिहासिक सत्य है। लेकिन यहाँ यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि काबा की हैसियत अल्लाह के घर की है। उसे बुतख़ाना तो लोगों ने अपनी अज्ञानता और उद्दंडता से बना रखा था। (काबा सिर्फ़ अल्लाह की इबादत के लिए ही बनाया गया था। इस बात को अरब के बुतपूजक भी मानते थे। बाद के ज़माने में अल्लाह के इस घर में बहुत-से बुत लाकर रख दिए गए, जो बिल्कुल ग़लत था। उन्हीं बुतों को नबी *(सल्ल.)* ने काबा से हटाया और उसे पहले की तरह ख़ालिस अल्लाह की इबादत का घर बना दिया।)

नबी *(सल्ल.)* ने ईसाइयों और यहूदियों की इबादतगाहों को ढाया हो, इसका कोई उदाहरण नहीं पेश किया जा सकता।

इस्लाम का प्रचार और तलवार

एक सवाल यह किया गया है कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला है। अपनी निजी ख़ूबियों की वजह से वह दुनिया में नहीं फैला।

यह केवल एक दावा है जिसके पीछे कोई दलील नहीं पाई जाती। क़ुरआन ने तो साफ़ शब्दों में ज़ोर-ज़बरदस्ती से काम लेने से रोका है।

इस्लाम पर आपत्ति करनेवाले दुनिया के इतिहास को भूल जाते हैं। उनकी ज़बान खुलती है तो इस्लाम के विरुद्ध और निराधार आरोप घड़ने का कर्त्तव्य निभाया जाने लगता है। दुनिया के इतिहास पर नज़र डालिए तो मालूम होगा कि बहुत-सी हुकूमतों ने अपने मत और धर्म को ताक़त के बलबूते पर फैलाया है। दूर क्यों जाइए। भारत ही के इतिहास

को लीजिए। यहाँ बुद्धमत अशोक और हर्ष वर्धन की हुकूमत की मदद से फैला है। समनर पंथ का भी यही इतिहास है। एक समय वह था जब कि भारत के सारे ही राजा-महाराजा समनर पंथी थे और भारत पर यही मत और पंथ छाया हुआ था। इसके बाद वैदिक धर्म (हिन्दू मत) का ज़माना आया। इस धर्म ने हुकूमत की शक्ति से दूसरे धर्मवालों को ख़त्म किया और इस सिलसिले में लोगों को सूली तक पर चढ़ाया गया। यह है वह तरीक़ा जिसे अपनाकर भारत को एक हिन्दू राष्ट्र बनाने की कोशिश की गई।

फिर भारतीय शासकों ने फ़ौजकशी करके दूसरे देशों में भी अपने धर्म को फैलाया। जावा, सुमात्रा और कम्बोडिया में आज भी हिन्दू धर्म के चिह्न और मूर्तियाँ पाई जाती हैं। ईसाई धर्म के माननेवाले शासकों ने जब अन्य देशों पर फ़ौजकशी की तो वहाँ उन्होंने ईसाईयत को भी फैलाने की कोशिश की।

अब अगर यह साबित भी हो कि कुछ मुस्लिम शासकों ने इस्लाम के प्रचार में अपने प्रभाव को भी इस्तेमाल किया तो यह कोई निराली ग़लती नहीं है, जिससे इस्लाम को बदनाम करने की कोशिश की जाए। आज के इल्मी दौर में भी बार-बार यह आरोप लगाया जाता है कि इस्लाम अपनी शक्ति से नहीं बल्कि तलवार की शक्ति से फैला है। आश्चर्य तो इस बात पर है कि यह आरोप लगानेवालों में ऐसे सत्ताधारी लोग भी नज़र आते हैं जिनका अपना हाल यह है कि वे बन्दूक़ की नाल पर अपने सिद्धान्त और मत को फैलाने का घृणित प्रयास करते हैं। लेकिन उनकी निगाह अपनी तरफ़ नहीं जाती।

आज के युग में धर्म के सम्बन्ध में ज़ोर-ज़बरदस्ती का सवाल ही नहीं पैदा होता। हाँ, अपने विचारों पर क़ायम रहने और उनको दूसरों तक पहुँचाने का अधिकार हर एक को प्राप्त है। आज के युग में भी इस्लाम स्वीकार करनेवालों की संख्या कुछ कम नहीं है। आख़िर उन्हें किस तलवार के द्वारा मजबूर किया गया है? वह कोई लोहे की तरवार नहीं है, बल्कि वह सच्चाई की कशिश है जो लोगों को अपनी ओर खींचकर रहती है।

☆☆☆

कुछ अन्य पुस्तकें

औरत और इस्लाम	मौलाना जलालुद्दीन उमरी
औरत और प्राकृतिक नियम	मौलाना मौदूदी
आख़िरत के अज़ाब से ख़ानदान को बचाईए	मौलाना जलालुद्दीन उमरी
आख़िरी नबी (सल्ल॰)	हमूदा अब्दुल-आती
आदाबे ज़िन्दगी	मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ इस्लाही
आतंकवाद और इस्लाम	डॉ॰ अब्दुल मुग़नी
आतंकवाद और पश्चिमी आक्रमक नीति	प्रो॰ ख़ुर्शीद अहमद
आवागमनीय पुर्नजन्म	डॉ॰ मुहम्मद अहमद
अनेकेश्वरवाद की वास्तविकता	मौलाना अहसन इस्लाही
अहम हिदायतें	मौलाना मौदूदी
अच्छे लोग	इरफ़ान ख़लीली
अनूदित क़ुरआन मजीद (20×30/08)	मौलाना मौदूदी
अनूदित क़ुरआन मजीद (20×30/16)	मौलाना मौदूदी
अन्देशों के गिरफ़्तार	माइल ख़ैराबादी
अन्धा इन्साफ़ (बच्चों के लिए)	मतीन तारिक़ बाग़पती
अनमोल नसीहतें	अब्दुल बदीअ सक़र
अपनी इस्लाह आप	नईम सिद्दीक़ी
अमानत का बोझ	माइल ख़ैराबादी
अल-असमाउलहुस्ना (काव्य)	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ
अल्लाह का दीन नौजवानों से क्या चाहता है	मौलाना जलालुद्दीन उमरी
अल्लाह के रसूल का व्यावहार अपने शत्रुओं के साथ	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ
अल्लाह ही के हो कर रहो	ख़ुर्रम मुराद
इक़बाल की कविताएँ (बच्चों के लिए)	सनाउल्लाह सुमन
ईदुल-फ़ित्र किसके लिए?	मौलाना मौदूदी
ईसा मसीह और मरयम क़ुरआन के दर्पण में	मुहम्मद ज़ैनूल-आबिदीन मंसूरी
इंसान और उसकी समस्याएँ	मौलाना जलालुद्दीन उमरी

इंसान अपने आप को पहचान	मौलाना वहीदुद्दीन ख़ां
इंसान की आर्थिक समस्या और उसका इस्लामी हल	मौलाना अबुल आला मौदूदी
इंसाफ	बिन्तुल इस्लाम
इंसाफ के अलमबरदार बनो	डा॰ अब्दुल हक़ अन्सारी
इबादत	मौलाना मौदूदी
ईमान की कसौटी	मौलाना मौदूदी
नमाज़	नसीम ग़ाज़ी फ़लाही
जीवनी हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰)	मु॰इनायतुल्लाह सुब्हानी

☆☆☆